

पद्मपुराण भाषा

चतुर्थ ब्रह्मखण्ड

जिसमें

वैष्णवों के लक्षण, मंदिर-लेपन, दीप-दान और जयंती-व्रत का माहात्म्य, कर्म-विपाक, वैकुंठ प्राप्त होनेवाली पुण्य और राधाष्टमी का माहात्म्य, क्षीर-समुद्र का मथन, जन्माष्टमी और एकादशी का माहात्म्य आदि अनेक विषयों का वर्णन किया गया है।

हिंदी-अनुवादक
उन्नामप्रदेशान्तर्गत तारगाँवनिवासी
पण्डित रामबिहारीसुकुल

लखनऊ
केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा
नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित
सन् १९२४ ई०।

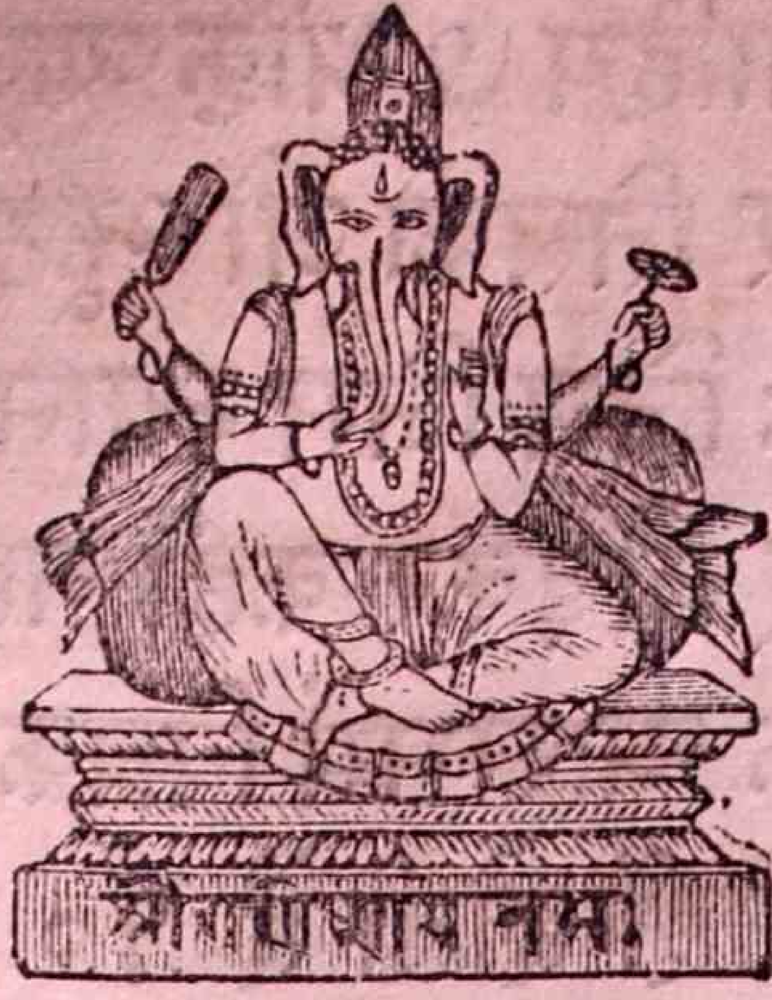
तीसरी बार]

भूमिका

प्रकट हो कि इस खण्ड में वैष्णवों के लक्षण, भगवान् के मंदिर लीपने का माहात्म्य, दीप-दान और जयन्ती-व्रत का माहात्म्य, कर्म-विपाक, वैकुण्ठ प्राप्त होनेवाली पुण्य, श्रीराधाष्टमी का माहात्म्य, समुद्र मथने का उद्योग, क्षीर समुद्र का मथन, लक्ष्मीजी के बृहस्पति के व्रतों का वर्णन, ब्राह्मण का पालन, भगवान् की जन्माष्टमीका व्रत, ब्राह्मण और एकादशी का माहात्म्य, भगवान् को घी-समेत लाई और कौड़ी देने का माहात्म्य और भगवान् के चरणोदक का माहात्म्य, पापों के प्रायश्चित्तों का वर्णन, विष्ठा और मूत्र के खा लेने और मदिराके स्पर्श आदि पापकर्मोंका प्रायश्चित्त, राधा और कृष्णजी की पूजा का माहात्म्य, कार्त्तिक महीने की विधि और नियमों का वर्णन, तुलसीजी, विष्णुपञ्चक और दानों के माहात्म्य का वर्णन, पुराण बाँचनेवाले के पूजन आदि का फल, प्रतिज्ञा के पालने और न पालने के दोषों का वर्णन इत्यादि विषय मनोहर भाषा में वर्णित हैं। जिसको बाबू प्रयागनारायणजी की आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशांतर्गत तारगांवनिवासी पण्डित रामविहारी सुकुल ने भगवद्भक्तों के उपकार के लिये संस्कृत से प्रत्यक्षर का भाषानुवाद कियाहै और उत्तम अक्षरों में सफ़ेद काग़ज़ पर छापा गया है। यह पुराण ऐसा उत्तम है कि इसमें कोई कथा ऐसी नहीं है, जो इसमें न हो और दूसरे पुराण में विद्यमान हो इससे यह पुराण प्रत्येक भगवद्भक्त के घर में रहना चाहिये। आशा है, इसको देखकर भगवद्भक्त अत्यंत प्रसन्न होकर प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करेंगे और यन्त्रालयाध्यक्ष को धन्यवाद देंगे।

मैनेजर—नवलकिशोर-प्रेस (बुकडिपो)
हज़रतगंज, लखनऊ

पद्मपुराण भाषा के ब्रह्मखण्ड का सूचीपत्र।



पद्मपुराण भाषा

चतुर्थ ब्रह्मखण्ड

पहला अध्याय

वैष्णवों के लक्षणों का वर्णन ॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी! कलियुग के प्राप्त होने में प्राणियोंका किसकर्म्म से उद्धार होताहै तिसको मेरे आगे कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ! तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया है पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ तुम हो और निरन्तर सब मनुष्यों के कल्याण की वाञ्छा करते हो २ इसको जैमिनिने पूर्व्वसमय में सब जाननेवाले, सबसे पूजित, व्यास ब्राह्मणसे पूंछा था तिसको व्यासजीने जो कहा था तिसको हे वैष्णव शौनक! सुनिये ३ मुनियों में श्रेष्ठ जैमिनि सब अर्थों के पारगामी, सत्यवतीजी के पुत्र गुरु व्यासजी के दण्डवत् प्रणामकर पूछतेभये ४ कि कलियुगमें मनुष्यों का किस थोड़ी पुण्य से मोक्ष होताहै क्योंकि मनुष्य थोड़ी उमरवाले होते हैं तिसको मुझ से कहिये ५ तब व्यासजी बोले कि हे विप्र! हे प्रभो! साधुओं के संग से शास्त्रों का सुनना होताहै तिससे भगवान् की भक्ति तिससे ज्ञान और तिससे गति होती है ६ जिस अत्यन्त पापी मनुष्य को पृथ्वी में कथा नहीं अच्छी लगती है तो वह वैष्णव ब्राह्मण भी

पापियोंमें श्रेष्ठ जानना चाहिये ७ श्रीकृष्णजीकी कथा सुनकर वैष्णव आनन्दित होता है और तिसको जो झूठ कहताहैं तो वह पापियों का गुरु जानने योग्यहै ८ जिस जिस स्थानमें कृष्णजीकी कथा होती है तिस तिसको भगवान् छोड़कर कहीं नहीं जाते हैं ९ जो अधम मनुष्य कृष्णजीकी कथाके आरम्भमें विघ्नकरताहै उसकी सौमन्वन्तर पर्यन्त नरकसे निष्कृति नहीं होती है १० जे पुराण की कथासुनकर निन्दा करते और हँसते हैं उनके हाथों में बहुत क्लेश देनेवाले नरक सदैव स्थित रहते हैं ११ जो श्रीकृष्णजी के चरित्र सुनने की इच्छा करता है तिसके और जन्मके इकट्ठे किये पाप तिसी क्षणसे नाश हो जातेहैं १२ और भक्तिसे जो श्रीकृष्णचरित्रों को सुनता है तो नहीं जानते तिसकी क्या गति होगी १३ पापी मनुष्य के ब्रह्म-हत्या आदिक पाप, पराई स्त्रीका हरना, मदिरा पीना और चोरी ये सब पाप नाश होजाते हैं १४ जो मनुष्य पापको करके पीछे से पाप को निवृत्त करताहै तो उसके पाप इस प्रकार नाश होजाते हैं जैसे अग्निसे रुईका समूह नाश हो जाताहै १५ और जिसके घरमें श्री-कृष्णजी के चरित्रवाली पुस्तक स्थित रहती है तिसके घरके पास यमराजके दूत नहीं आते हैं १६ तब जैमिनि जी बोले कि हे गुरो, व्यासजी ! वैष्णव किनको कहते हैं इससमय में तिनके जानने और तिन्हीं के उत्तम माहात्म्य जानने की मेरे वाञ्छा है तिसको आप कहिये १७ तब व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण, जैमिनि ! जो पापी मनुष्य वैष्णवों के चरणों के धोये जलको भक्तिसे मस्तक में सीं-चता है तो उसको तीर्थ के स्नान की कुछ आवश्यकता नहीं है १८ जो मनुष्य एक क्षण वा आधाही क्षण साधुओं का संग करता है तो उसके ब्रह्महत्या आदिक पाप नाश हो जाते हैं १९ जिसके कुल में एक भी वैष्णव होता है तो उसका कुल जो पापों से युक्त हो तो मोक्षको प्राप्त होजाता है २० जे मनुष्य हिंसा, दम्भ, काम, क्रोध, लोभ और मोहसे हीन होते हैं वे वैष्णव जानने चाहिये २१ पिता के भक्त, दयायुक्त, सब प्राणियों के हित में रत, मत्सरहीन और सत्य बोलनेवाले वैष्णव जानने चाहिये २२ ब्राह्मणों की भक्ति में

रत, पराई स्त्रियों में नपुंसक और जे एकादशी के व्रत में रत होते हैं वे वैष्णव जानने योग्य हैं २३ जे तुलसी की माला धारण करने वाले हरिजी के नामों को गाते और हरिजी के चरणजलों से सींचे जाते हैं वे वैष्णव जानने चाहिये २४ जिनके कानों और माथे में उत्तम तुलसीजी का पत्र कभी दिखाई पड़ता है तो वे वैष्णव जानने योग्य हैं २५ पाखण्डियों के संग से रहित, ब्राह्मण के वैर से हीन और जे तुलसीजी को सींचते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये २६ जे तुलसी से हरिजी को पूजते, कन्यादान में जे रत, अतिथि को जे पूजते २७ और विष्णुजी के चरित्रों को जे सुनते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं जिसके घरमें शालग्राम की मूर्ति स्थित होती है २८ हरिजी के स्थान को बहारते, पितृयज्ञ करते और दीन मनुष्य में जे दया करते हैं वे वैष्णव जानने चाहिये २९ पराई और ब्राह्मण की द्रव्य जे विषकी नाईं देखते हैं और जे भगवान् की नैवेद्य को भोजन करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ३० जे वेदशास्त्र में अनुरक्त, तुलसी के वनके पालनेवाले और राधाष्टमी व्रतमें रतहैं वे वैष्णव जानने चाहिये ३१ जे श्रीकृष्णजी के आगे श्रद्धासे दीप देते और पराई निन्दा नहीं करते हैं वे वैष्णव जानने योग्य हैं ३२ सूतजी बोले कि हे ब्रह्मन् शौनक! जैमिनिजी के पूछने पर व्यासजी ने यह जिसतरह से कहा और मैंने जो प्रसंग से गुरुजी से सुना तिसको उसी क्रम से कहा है ३३ जे उत्तम मनुष्य श्रद्धायुक्त होकर इस अध्याय को सुनते हैं वे सब पापों से छूटकर विष्णुजी के परंपद को प्राप्त होते हैं ३४॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे व्यासजैमिनिसंवादे प्रथमोऽध्यायः १॥

दूसरा अध्याय

भगवान् के मन्दिर के लीपने का माहात्म्य वर्णन॥

सूतजी बोले कि हे शौनक! व्यास और जैमिनिजी के संवाद, सुननेवालों के पाप नाश करनेहारे पुराने धर्म को कहताहूं सुनिये १ जैमिनि बोले कि हे गुरो! हे प्रभो! पापी मनुष्य किस कर्म्म से

भगवान् के मन्दिर को जाता है यह इस समय में मुझसे कहिये २ तब व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! जो मनुष्य श्रीकृष्णजी के मन्दिर में लीपता है वह सब पापों से छूटकर श्रांत होकर हरिजी के स्थान को जाता है ३ जो भगवान् के मन्दिर में जलसे लीपता है तिसके पुण्य को मैं संक्षेपसे कहताहूं सुनिये ४ हे उत्तम ब्राह्मण! तहां पर जितनी धूलि दिखाई पड़ती हैं तितनेही हज़ार कल्प वह विष्णुजी के मन्दिर में बसता है ५ पूर्वसमय द्वापर युगमें दण्डकनाम चोर हुआहै यह मनुष्योंको भय देनेवाला, ब्राह्मणों की द्रव्य चुरानेवाला, मित्रों का नाश करनेहारा, ६ झूठ बोलनेवाला, क्रूर, पराई स्त्री के गमन में रत, गऊका मांस खानेवाला, मदिरा पीनेवाला, पाखण्डी, मनुष्यों का संग सेवन करनेवाला, ७ ब्राह्मणों की जीविका छीननेवाला, न्यास का हरनेहारा, शरणागतों के नाशनेवाला और वेश्याओं के हावभाव कटाक्ष में लोलुप था ८ एक समय में यह मूढ़बुद्धि किसी विष्णुजी के स्थानमें भगवान् की द्रव्य चुराने के लिये गया ९ तदनन्तर देवस्थान के द्वारमें प्रवेश कर यह चोर कीचड़ से युक्त अपने सब पांवको निम्नभूमि में पोंछता भया १० तो इसी कर्म से पृथ्वी लीपी होगई और आनन्दसे लोहकी शलाकाओं से किंवाड़को उखाड़कर ११ भगवान् के स्थान में प्रवेश करताभया जोकि श्रेष्ठ विमानों से शोभायमान, रत्न और सोने के दीपोंसे युक्त, बड़े अन्धकार से रहित, १२ अनेक प्रकार के सुगन्धित फूलों से युक्त, अनेक बर्तनों से आकुल और सुगन्धित तेल की सुगन्धसे परिपूर्ण है १३ तहांपर इस चोरने सुन्दर मनोहर शय्या में राधासमेत सोतेहुए पीताम्बरधारी भगवान्को देखा १४ और राधिका के स्वामी को प्रणामकर तिससमय में पापरहित होगया फिर यह कहनेलगा कि चोरी करूं या न करूं इससे क्या मेरा होगा १५ सेवा करने में तो मैं समर्थ नहीं हूं जिससे कि मैं सदैव चोरहूं द्रव्यसे कार्य्य होताहै यह कहकर द्रव्य चुराने के लिये मन कर १६ पृथ्वी में भगवान् के रेशमी कपड़ेको बिछाकर सब वस्तुओं को बांधकर हाथ में कर कांपता भया १७ तब मायापति विष्णुजी के सब

बर्तन इत्यादिक बड़ा शब्दकर कांपने से पृथ्वी में गिरपड़े १८ तो वहांके बहुतसे मनुष्य जगकर दौड़कर वहां आगये तब चोर शीघ्रता से द्रव्यको १९ और धनको वहीं छोड़कर कुछ भगा कुछ दूर गया है कि उसको कालरूपी सांपने काटखाया तो वह पापहीन मरगया २० तब यमराजजीकी आज्ञासे उनके दूत फँसरी और मुद्गर हाथ में लिये, बड़ी डाढ़ों और चमड़े के कपड़े धारण कर चोरके लेने के लिये प्राप्त होगये २१ और उसको चमड़ेकी फँसरी से बांधकर दुर्गम राहसे लेगये तिसको देखकर क्रोधयुक्त होकर यमराजजी चित्रगुप्त मन्त्री से पूँछतेभये २२ कि हे बुद्धिमान्, चित्रगुप्त! इसने क्या पाप वा पुण्यकर्म्म कियाहै मूलसमेत मेरे आगे कहो २३ तब चित्रगुप्त बोले कि हे लोकोंके स्वामी! हे यमुनाजीके भाई! ब्रह्माने पृथ्वी में जितने पाप बनाये हैं वे सब इस मूर्खने किये हैं यह मैं सत्यही कहता हूं २४ किन्तु इसका सब पाप नाश करनेवाला सुकृतभी है तिसको सुनिये २५ तब धर्म्मराज बोले कि हे मंत्री! इसकी क्या पुण्य वर्तमान है तिसको मेरे आगे कहिये उसको सुनकर जिस योग्य यह होगा वैसा करूंगा २६ यमराजजी के ये वचन सुनकर डरसमेत चित्रगुप्त अपने स्वामी के हाथ जोड़कर बोले २७ कि हे राजन्! यह पापियों में श्रेष्ठ भगवान् की द्रव्य चुराने के लिये गयाथा वहां भगवान् के द्वारमें अपने पांवोंके कीचड़ को पोंछ दिया था २८ उससे पृथ्वी लीपी, बिल और छेदों से रहित होगई थी तिसी पुण्य के प्रभाव से बड़े भारी पाप इसके सब नष्ट होगये यह तुम्हारे दण्डसे निकल कर वैकुंठ जाने के योग्य है २९ व्यासजी बोले कि चित्रगुप्त के ये वचन सुनकर यमराज जी तिसको सोने का पीठ बैठने के लिये देते भये वहां पर वह बैठा तब यमराजजी ने उसकी पूजा की ३० और नम्रतायुक्त होकर शिर से नमस्कार कर उससे बोले कि तुम्हारे चरणों की धूलियों से इस समय में मेरा मन्दिर पवित्र हुआ है ३१ और मैं निस्सन्देह कृतार्थ हुआहूं हे साधो! इस समय में भगवान् के उत्तम मन्दिर को जाइये ३२ जो कि अनेक प्रकार के भोगों से युक्त जन्म और मृत्यु का निवारण

करनेवाला है व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! ऐसा कहकर धर्मराज सोने के बनेहुये रथ ३३ राजहंसों से युक्तमें उस पापरहित को चढ़ाकर सब सुख देनेवाले भगवान् के स्थानको भेजते भये ३४ इस प्रकार वह वैकुण्ठ में गया और बहुतकाल वहां सुखसे स्थित रहा जे भक्तिसे भगवान् के मन्दिर को लीपते हैं ३५ तिनके पुण्य को मैं नहीं जानताहूं कि क्या होगा जो भक्ति से एकाग्रचित्त होकर इस को सुनता वा पढ़ताहै ३६ तो उसके करोड़ जन्मके इकट्ठे कियेहुए पाप निस्संदेह नाश होजाते हैं ३७ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेहरिमन्दिरलेपनमाहात्म्यंनामद्वितीयोऽध्यायः२।

तीसरा अध्याय

दीपदानका माहात्म्य वर्णन ॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी ! कार्त्तिक का माहात्म्य मेरे आगे कहिये कार्त्तिक के व्रत का क्या फल है और न व्रत करने में क्या दोष है १ तब सूतजी बोले कि हे शौनक ! पूर्वसमय में जैमिनि ने सत्यवती के पुत्र व्यासजी से यह पूंछा था तब व्यासजी कहने का प्रारंभ करते भये हैं २ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! जो मनुष्य शुभ देनेवाले कार्त्तिक में तिलके तेल और मैथुन को छोड़ देता है वह बहुत जन्मों के कियेहुए पापों से छूटकर भगवान् के स्थान को जाता है ३ जो मनुष्य कार्त्तिक में मछली और मैथुनको नहीं त्याग करता है वह मूर्ख प्रत्येक जन्म में निश्चय सुअर होता है ४ कार्त्तिक में तुलसी के पत्रोंसे भगवान् को जो मनुष्य पूजन करता है वह पत्रमें अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्त होता है ५ और कार्त्तिकमें अगस्त्य के फूलों से जो भगवान् को पूजन करता है वह हरिजीकी कृपासे देवताओं के दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होताहै ६ जो उत्तम मनुष्य कार्त्तिक में अगस्त्य के शाकको भोजन करता है उसके एक शाक हीसे साल भरके कियेहुए पाप नाश होजाते हैं ७ और जो मनुष्य भगवान् के प्यारे कार्त्तिक महीने में अगस्त्य के फलको भगवान्

को देकर भोजन करता है तो उस के करोड़ जन्मके पाप नाश हो जाते हैं ८ जो घी से युक्त सुन्दर रस को भगवान् को देता है वह सब पापोंसे छूटकर भगवान् के स्थान को जाता है ९ कार्त्तिक में जो मनुष्य एक कमल भगवान् को देता है वह सब पापों से रहित होकर अन्त में विष्णुपद को जाता है १० जो मनुष्य श्रीहरिजी के प्यारे कार्त्तिक में प्रातःकाल स्नान करता है वह सब तीर्थों में स्नान करने के फल को प्राप्त होता है ११ कार्त्तिक में जो ब्राह्मण मनुष्य आकाश में दीप देता है वह ब्रह्महत्या आदिक पापों से छूट कर भगवान् के स्थान को जाता है १२ जो कार्त्तिक में भगवान् की प्रीतिके लिये मुहूर्तमात्र भी आकाश में दीप देता है तो उसके ऊपर हरिजी सदैव प्रसन्न रहते हैं १३ जो ब्राह्मण कार्त्तिक में कृष्णजीको घरमें घी समेत दीप देता है वह दिन दिन में अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्त होता है १४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! दीपका इतिहास समेत मैं माहात्म्य कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनिये १५ पूर्वसमय त्रेतायुग में वैकुण्ठनाम पवित्र ब्राह्मण हुआ है जिसके संग के प्रभावसे पापी मुक्त होता है १६ एक समय में ब्राह्मणों में श्रेष्ठ वैकुंठ हरिजी के आगे घीसे पूर्ण दीप देकर घरको चलाआया १७ तब दीप के घी खानेके लिये मूसा आताभया जबतक मूसा खाने का प्रारंभ करै तबतक दीप अधिक प्रज्वलित हो गया १८ तो मूसा अग्नि के डरसे वेग से भागा तब तो भगवान् की कृपासे मूसे के सब पाप नाश होगये १९ फिर सांपने मूसेको काटा तो मूसा प्राण त्याग करताभया तब यमराजजीकी आज्ञासे उनके दूत पाश और मुद्गर हाथ में लेकर २० तिसके लेने के लिये आतेभये और चर्म की रस्सियों से बांधकर जबतक लेजाने का मन करते भये तभी शंख, चक्र, गदा धारे २१ विष्णुजी के दूत चारभुजावाले गरुड़ पर चढ़कर प्राप्त होगये और आकाश में राजहंसों से युक्त, शुभ विमान २२ शुद्ध सोने से बनाहुआ इच्छा के अनुसार जानेवाला भगवान् की कृपा से प्राप्त होताभया तब भगवान् के दूत मूसे की फँसरी काटकर यमराज के दूतोंसे बोले २३ कि रे मूर्खो! यह विष्णु

जीका भक्त है इसका तुमने व्यर्थही बन्धन किया है इससे जो जीवनेकी वाञ्छा हो तो जावो २४ ये विष्णुदूतों के वचन सुनकर कँपकर नम्रतायुक्त होकर यमराज के दूत पूछते भये कि किस पुण्यके प्रभाव से आपलोग इसको भगवान् के पुरको लिये जातेहौ २५ यह तो महापापी है यह आप कहने के योग्य हैं तब भगवान् के दूत बोले कि वासुदेवजी के आगे दीप को इसने प्रज्वलित किया है २६ हे यमदूतो! तिसी कर्म्म से हमलोग विष्णुजीके मन्दिरको लियेजाते हैं जो विना इच्छाके भी विष्णुजी के दीपको प्रज्वलित करता है २७ वह करोड़ जन्मों के इकट्ठे किये हुए पापोंको छोड़कर भगवान् के स्थानको जाता है और जो भक्तिसे कार्त्तिक में भगवान् के दिनों में दीप देता है २८ तिसकी पुण्य को हरिजी के विना कोई कहने में समर्थ नहीं है और जो घीसे पूर्णदीप भक्तिसे भगवान्के स्थान में देता है २९ तिसको हज़ार अश्वमेधयज्ञ करनेका कुछ प्रयोजन नहीं है अश्वमेधयज्ञ का करनेवाला और एकादशी में ३० कार्त्तिक में दीप देनेवाला भी भगवान् के स्थान को जाता है व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! यह सुनकर यमराज के दूत तो जैसे आये थे वैसेही चलेगये तब भगवान्के दूत उस मूसेको रथमें कर भगवान्के स्थान को जातेभये तो उसको सौ मन्वन्तर विष्णुजी के समीपमें रहते बीतते भये ३१।३२ तदनन्तर मूसा भगवान् की कृपासे मनुष्यलोकमें राजकन्या होता भया और इस राजकन्या ने पुत्र और पौत्रयुक्त होकर बहुत कालतक भोग किया ३३ फिर मृत्युलोक से भगवान् की कृपासे गोलोक को चलीगई सूतजी बोले कि हे शौनक! जो मनुष्य भक्तिसे उत्तम दीपमाहात्म्यको सुनता है ३४ तो वह सब पापोंसे छूटकर भगवान्के स्थानको जाता है ३५॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे दीपदानमाहात्म्यं नाम तृतीयोऽध्यायः ३॥

चौथा अध्याय

जयन्तीव्रतका माहात्म्य वर्णन॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी! आप मुझको संसाररूपी समुद्र

तरने के लिये नावरूप हैं इससे जयन्ती के माहात्म्य को कहिये मनुष्यों को कब करनी चाहिये १ तब सूतजी बोले कि हे ब्राह्मण! हे मुनियों में श्रेष्ठ शौनक! जो तुमने पूछा है तिसको मैं कहताहूं इसको देवस्थान में पूर्वसमय में नारदजी ने ब्रह्माजी से पूछाथा २ नारदजी बोले कि हे पितामह ब्रह्माजी! जयन्ती के माहात्म्य को कहिये जिसको सुनकर मैं विष्णुजी के परमपद को जाऊं ३ तब ब्रह्माजी बोले कि हे ब्राह्मण नारद! तुम्हारे आगे कहताहूं एकाग्र-चित्त होकर सुनो जयन्ती के व्रत करनेसे कर्ता विष्णुलोकको जाता है ४ हे मुने! जयन्ती स्मरण और कीर्तन करने से सात जन्म के इकट्ठे कियेहुए पापों को जला देती है फिर व्रत करनेवाले के पुण्य का तो कहनाही क्या है ५ भादों में जन्माष्टमी, चैत्र में शुक्लपक्ष की शुभकारिणी नवमी, फाल्गुन में कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, वैशाख में शुक्लपक्ष की चतुर्दशी, ६ कुँवार में दुर्गाष्टमी और शुक्लपक्ष की श्रवणयुक्त द्वादशी ये छः महापुण्यकारिणी और शुभ देनेवाली जयंती कहाती हैं ७ भादों में कृष्णपक्षकी जन्माष्टमी प्रसिद्ध, पापनाश करनेवाली, करोड़ यज्ञों और दशहज़ार तीर्थों के समानहै ८ जयंती-के व्रत करने में कर्ता दिन दिनमें हज़ार गौवों के देने के फलको प्राप्त होताहै ९ जो कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहण में हज़ार भार सोना देने में फल पाता है तिसी फलको जयंती में व्रत करनेवाला भी पाता है १० हज़ार कृष्णवर्ण मृगछाला और सौ तिलधेनु के देने के फल को जयन्ती में व्रत करने से पाता है ११ हज़ार करोड़ कन्याओं के दान करने में जो फल होता है वह जयंती में व्रत करने से प्राप्त होता है १२ समुद्रपर्यन्त इस पृथ्वी के देने में जो फल मिलता है वह फल जयंती में व्रत करने से प्राप्त होता है १३ देवता के स्थान में बावली, कुँवां और तालाब आदि के बनवाने में जो फल होता है वह फल जयंती के व्रत करने में मिलता है १४ जो माता, पिता और गुरुओं की भक्ति करने से फल होता है वह जयंती में व्रत करने से मिलता है १५ आपदा हरने के लिये तीर्थसेवा में आत्मा को लगानेवाले और सत्यव्रतवालों को जो फल मिलता है वह फल

जयंती में व्रत करने से मिलताहै १६ गंगा, यमुना और सरस्वती के जलमें स्नान करने से जो पुण्य होताहै वह जयंती में व्रत करने से होताहै १७ जो अमावस में पितरों की श्राद्ध करनेवालों को पुण्य होताहै वह जयंती में व्रत करने में होताहै १८ नारदजी बोले कि हे पितामह ब्रह्माजी ! किस किसने पहले इस व्रतको किया है तब ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! सहस्रबाहु, कर्ण, बुद्धिमान् कुमार, १९ सगर, दिलीप, रामचन्द्र, गौतम, गार्ग्य, बुद्धिमान् परशुराम, २० बाल्मीकि और साधु द्रौपदी के पुत्रने पूर्व्वसमय में इस व्रतको किया है भादों के कृष्णपक्ष की अष्टमी वांछित कामनाओं को देती है २१ और रोहणीनक्षत्रयुक्त अष्टमी विशेष कर उत्तम कही है यह अष्टमी भगवान् की प्रीति के लिये वर्ष वर्ष में करनी चाहिये २२ इसके करने से करोड़ जन्मके पाप मुहूर्त भरमें नाश होजाते हैं रात्रिमें जागरण कर निष्ठापूर्वक जितेन्द्रिय कर्ता २३ गन्ध और फूल आदिक और नैवेद्यों से अलग अलग भगवान् को पूजन करै हे ब्राह्मण ! इस प्रकार जो जयंती का व्रत करता है २४ उसके करोड़ जन्म के ज्ञान वा अज्ञान से किये हुए पाप २५ भगवान् के प्रसाद से आधेपहर में नाश होजाते हैं और जयंती तिथिके प्राप्त होने में जे अधम मनुष्य भोजन करते हैं २६ वे तीनों लोकों के उत्पन्न पापों को निस्सन्देह भोजन करते हैं मुक्ति के स्थान सागर आदिक सब तीर्थ २७ जयन्ती के व्रत करनेवाले के घर और उस के सब अंगमें स्थित होते हैं हे महामुने ! जो भक्तिसे कृष्णजी की प्यारी जयंती के व्रत को करता है तिसकी देह में सब तीर्थ और देवता स्थित होते हैं वेद और पुराण में मैंने ऐसा व्रत नहीं देखा है २८। २९ कृष्णराधाष्टमी व्रतके समान वा अधिक कोई व्रत नहीं है जो मनुष्य भक्ति से इस व्रतको नहीं करता है वह क्रूर राक्षस होता है ३० हे ब्राह्मण ! जो मूर्ख मनुष्य जयंती के दिन भोजन करताहै वह एकादशी व्रतकी नाईं महानरक को भोजन करता है ३१ जयन्ती में भोजनसे मनुष्य भूत और वर्तमानकाल के एकसौ एक कुल को घोर नरक में गिरादेता है ३२ हे मुनिशार्दूल ! जो जयन्ती अष्टमी

बुधवारमें रोहिणीनक्षत्रसमेत हो तो इस व्रतके करनेवाले को और करोड़ों व्रत करने की आवश्यकता नहींहै ३३ सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलियुग में पापनाश करनेवाली जयंती अच्छी विधिसे करनी चाहिये ३४ भगवान् के जागरण में जो पुराणको पढ़ाता है उसके जन्मपर्यन्त के पाप इस प्रकार जलजाते हैं जैसे रुई का समूह जलजाता है ३५ जो मनुष्य भगवान् के व्रतके दिन भक्तिसे पुराण सुनता है तो उसके करोड़ जन्म के पाप तिसी क्षणसे नाश होजाते हैं ३६ हे मुने! जो भगवान् के व्रत के दिन कथा बांचने वाले की पूजा करताहै वह करोड़ कुल को उद्धारकर विष्णुलोकमें पूजित होताहै ३७ जयन्ती के व्रतसे जो मनुष्य पराङ्मुख रहताहै वह सब धर्मोंसे छूट कर निश्चय नरकको जाताहै ३८ जयंती व्रतमें चन्दन, फूल, धूप और घीसे पूर्ण दीपोंसे भक्तिभावों से युक्त होकर मनुष्य भगवान्को पूजन कर ब्राह्मणको दक्षिणा देवे ३९ हे विप्र! जो मनुष्य इस विधिसे भक्तिसे जयंतीको करताहै वह इक्कीस पुरुषोंको तार देता है ४० और उसके घरमें भाग्यहीनता, विधवापन, लड़ाई और संतान का विरोध नहीं होताहै और धनका नाश नहीं देखता है ४१ जयंतीका व्रत करनेवाला जिन जिन कामनाओं को करताहै तिन सबको प्राप्त होता और विष्णुलोकको जाता है ४२ जे विष्णुजी की भक्ति में परायण और जयंती के व्रतमें मन लगाते हैं वे धन्य, कुलीन, ईश्वर और पण्डितहैं ४३ जितने तीर्थ, व्रत और नियमहैं वे जयंती के व्रतकी सोलहवीं कलाको भी नहीं पाते हैं ४४ हे वत्स! जो स्त्रीसमेत भादों के दोनोंपक्षों की राधाकृष्णाष्टमी के व्रत को करताहै वह भगवान् के समीप प्राप्त होताहै ४५ जयंती का व्रत करने वाला जो सदैव पुण्य भी करताहै वह भगवान् के वैकुण्ठलोक को प्राप्त होताहै ४६ भगवान् की प्यारी जयंती आचारहीनता, कुलभ्रष्टता, यशहीनता और बुरीयोनि से उत्पन्न हुए पापको शीघ्रही नाश करदेती है ४७ जयन्ती में व्रत करनेवाला मेरु पर्वतके बराबर ब्रह्महत्यादिक सब पापोंको जलादेताहै ४८ जयंती में व्रत करनेहारा पुत्रकी इच्छावाला पुत्रको, धनकी कामनावाला धनको और मोक्ष

की इच्छा करनेहारा मोक्षको प्राप्त होता है ४६ जिनका जयंती के व्रत करने में तत्पर चित्त होताहै उनसे यमराज भी नित्यही शङ्का करते हैं और वे परमगति को प्राप्त होते हैं ५० सूतजी बोले कि हे ब्रह्मन्! हे मुने! ब्रह्माजी नारदजी से कहकर जैसे आये थे वैसेही चलेगये मुझसे जो तुमने पूछा तिसको वैसेही मैंने कहा है ५१ जे जयन्ती के माहात्म्य को भक्तिभाव से सुनते हैं वेभी सब पापों से छूटकर परमधाम को प्राप्त होते हैं ५२ जे पापी भी मनुष्य पुराण के बांचनेवाले और जयन्ती के व्रत करनेवाले को देखते हैं तो वे भी परमपद को प्राप्त होते हैं ५३॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे ब्रह्मनारदसंवादे जयंतीव्रतमाहात्म्यं नाम चतुर्थोऽध्यायः ४॥

पांचवां अध्याय

कर्मविपाक का वर्णन॥

शौनकजी बोले कि हे महाबुद्धिमान्! हे सूतजी! मनुष्य किस कर्म्मसे पुत्ररहित और किससे पुत्रयुक्त होताहै १ तब सूतजी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ शौनकजी! इसको पूर्वसमयमें महात्मा नारदजी ने ब्रह्माजी से पूंछा था तब ब्रह्माजी ने जो नारदजी से कहा था तिसको तुम भी सुनो २ नारदजी बोले कि हे पितामह! हे महाबुद्धिमान्! हे सब तत्त्वोंके अर्थों के पारगामी! हे कमल से उत्पन्न ब्रह्माजी! किस कर्म्म से मनुष्य पुत्रहीन होताहै ३ और किस पापसे स्त्री बाँझ होती है हे सब प्राणियोंके हित में रत! यह मेरे आगे मुझको सुनाकर कहिये ४ किस कर्मसे कन्या वा नपुंसक वा पुत्र मरनेवाला पुरुष वा अत्यन्त दुःखित पुत्र मरनेवाली स्त्री होती है हे ब्रह्मन्! फिर किस पुण्यसे पुत्र होताहै यह सब कहिये ५ तब ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! संक्षेपसे तुमसे कहताहूँ सावधान होकर तिसको सुनिये तुमने सुननेवालों के विस्मय देनेवाले वृत्तान्त को पूछाहै ६ जो मनुष्य पूर्वजन्म में ब्राह्मणकी जीविकाको हरलेता वा हरालेता है वह यहांपर निश्चय पुत्ररहित होताहै ७ इस जन्ममें जो मनुष्य

पुराणको सुनता श्रद्धायुक्त होकर अन्नसमेत पृथ्वीका दान करता ८ बहुत गुणयुक्त, बहुत दूधवाली, दक्षिणासमेत गऊ, सोने की गऊ और सोनेकी मूर्त्तिको देताहै तिसके पुत्र निश्चय होताहै ९ जो स्त्री पूर्वजन्म में कपटसे पराये बालकको मारडालती है वह निश्चय बालकहीन होती है १० जो स्त्री श्रद्धायुक्त होकर सोने की मूर्त्तिका दान भक्तिसे ब्राह्मण के चरणजल का पान, ११ पुराण सुनना और बहुत दक्षिणाको दान करती है उसके बहुत लड़के होते और निस्सन्देह जीते हैं १२ जो पुरुष जलमें डूबते हुए बालक को देखकर नहीं निकालता है वह पुरुष इस जन्ममें पुत्रहीन होता है और स्त्री जो नहीं निकालती है तो वह भी निश्चय पुत्ररहित होती है १३ जो बैल, सोना और वस्त्रसमेत कुम्हड़े को ब्राह्मण को देवे, शुभ बालव्रत करे १४ आठ वर्षकी कन्याका विवाह करदेवे और पुराण को सुने तो निश्चय उसके पुत्र होवे और सबपाप नाश होजावें १५ जो मनुष्य पूर्वजन्ममें अतिथि को निराश और क्रोधसे दण्ड करता है वह निश्चय पुत्रहीन होताहै १६ वह ब्राह्मण और अतिथि को भक्तिसे पूजन करै अन्न और जलका दान तथा सुन्दर देवता का मन्दिर बनवावे १७ पूर्वजन्म में जो स्त्री तथा पुरुष गर्भहत्या करता है तो उसके निश्चय लड़के नहीं जीते हैं १८ जो अपने पतिसमेत स्त्री एकादशी का व्रत करती है वह प्रत्येक जन्म में सुन्दर पुत्रयुक्त और स्वामी की सुन्दर भाग्ययुक्त होती है १९ जो शूद्र मनुष्य विमोहित होकर गऊको मारडालताहै वा ब्राह्मणी को हरता है वह नपुंसक होता है २० हे ब्राह्मण! इस गऊके मारनेके पाप को कर जो पीछे से पुण्य करता है तो इसलोकमें पुण्यके प्रभावसे कन्या होता है २१ हे ब्राह्मण! त्रेतायुगमें श्रीधरनाम राजा पुत्रहीन और धनवान् हुए और उनकी स्त्री हेमप्रभावती हुई २२ यह राजा सब शास्त्रके जाननेवाले और सब मनुष्यों के हितकी इच्छा करनेहारे अपने यहां आये हुए व्यासजी से पूंछते भये कि हे ब्राह्मण! मैं पुत्रहीन कैसेहूं २३ तब राजाके दिये हुए सोने आदिकों से बने हुए पीठपर बैठे हुए व्यासजी के राजा और रानी ने अत्यन्त प्रसन्न

होकर दोनोंने उनके चरण धोकर सब पाप नाश करनेवाले चरणों के धोये जलको पिया तब व्यासजी राजा के नम्रतायुक्त वचन सुन कर उससे बोले २४। २५ कि हे राजन् ! जिसको तूने पूंछा है और जिस कर्म्मसे पुत्रहीनहो तिसको सुनो तुम्हारी यह रानी और एक हीस्त्रीके व्रतवाले जिससे पुत्रहीनहो २६ पूर्वजन्ममें श्रेष्ठ देहवाले चन्द्रनाम थे और तुम्हारी यहरानी सुन्दर अंगवाली शंकरी नाम थी २७ एक समयमें तुम दोनों राहमें चले जाते थे तब एक नीच मनुष्य का पुत्र जलमें डूबते हुए देखकर भी तुम दोनों ने निन्दासे नहीं निकाला तो वह नीचका पुत्र डूबकर मरगया २८ तिसी कर्म के प्रभावसे तुमलोगों के पुत्र नहीं हुआ है बहुत पुण्यके प्रभावसे तुम दोनों राजा रानी तो होगयेहो २९ तब राजा बोले कि हे प्रभो! इस समयमें किस पुण्य से निश्चय पुत्र उत्पन्न होगा क्योंकि पुत्र हीन मनुष्यों का तो जीना निरर्थक है ३० तब व्यासजी बोले कि कपड़े समेत कुम्हड़े को, सोने समेत बैलको ब्राह्मणको देवो, बाल-व्रत करो ३१ आठवर्ष की कन्याका दान दो पुराणसुनो तो सब पाप नाश होकर निश्चय पुत्र होगा ३२ ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह व्यासजीका कहाहुआ सुनकर राजा उत्तम दान देताभया और पुराण सुनताभया तो पापरहित होगया ३३ तदनन्तर वर्षके मध्य में सबसे पूजित पुत्र उत्पन्न हुआ जोकि सब पृथ्वी का राजा हुआ सुन्दर और कुलमें श्रेष्ठ भी हुआ ३४ सूतजी बोले कि हे ब्राह्मण शौनक ! यह मैंने संक्षेपसे तुमसे कहा है जो इसको भक्तिसे सुनता और उत्तमदान करता है तो पुत्रहीन पुत्रको प्राप्त होता है ३५ और जो स्त्री भक्ति से सुनकर ब्राह्मणका पूजन शास्त्र की कहीहुई विधिसे नित्यही करती है तो सुन्दर पुत्रयुक्त होती है ३६ और जो मनुष्य भक्तिसे पुस्तकमें सोना, चांदी, कपड़ा, फूल, माला और चन्दन देता है उसके सब पाप नाश होजाते हैं ३७ और जो मूर्ख ब्राह्मण पूर्व-जन्म में ब्राह्मण के बालक को मारडालता है तो उसके सातजन्मों से क्रूर पुत्र होताहै ३८॥

इति श्रीपाद्मे ब्रह्मखण्डे ब्रह्मनारदसंवादे कर्मविपाककथनंनाम पञ्चमोऽध्यायः ५॥

छठवां अध्याय

वैकुण्ठ प्राप्त होनेवाली पुण्य का वर्णन ॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी ! किस पुण्यसे वैकुण्ठ प्राप्त होता है तिसको मुझको सुनाकर कहिये क्योंकि आप भव समुद्रमें नावरूप हैं १ तब सूतजी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ ! हे सब मङ्गल के करनेवाले ! तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया है मैं सुननेवालों के पाप नाश करनेवाले चरित्रको संक्षेपसे कहताहूं २ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! जो ब्राह्मण मनुष्य विष्णुजी और ब्राह्मणको मिट्टी से बनेहुए स्थानको देताहै तिसकी पुण्यको सुनिये ३ वह ब्राह्मण सब पापों से रहित होकर विष्णुलोकमें महलमें नित्यही बसताहै और पूजित होताहै ४ जो विष्णुजी और ब्राह्मण को महल देताहै वह निश्चय स्वर्ग में भगवान् के स्थानमें बसताहै ५ अन्तसमय में वह करोड़ कुलोंसे युक्त होकर विष्णुजी के पुरमें जाकर सोनेके महलमें स्थित होकर सुखको भोग करता है ६ हे मुनिजी ! ब्राह्मणस्थापन में जो पुण्य होताहै तिसकी संख्या करनेको सबके करनेवाले ब्रह्माजी भी समर्थ नहीं हैं ७ धूलि और वर्षा की बूंदें तो गिनीजासक्ती हैं परन्तु ब्रह्मा भी ब्राह्मण के स्थापनमें फल नहीं गिनसक्ते हैं ८ हे महामुने ! पूर्व समयमें नारदजीने संसार के उत्पन्न करनेवाले ब्रह्माजी से पूछाथा तिसको ब्रह्माजीने कहा था तिसको तुमभी सुनो ९ हे ब्रह्मन् ! पूर्व समयमें द्वापर युगमें अत्यन्त सुन्दर वेश्या हुई जिसके सुन्दर बाल, हरिणी के समान नेत्र, सुन्दर कटिहांव, पवित्रहासयुक्त १० और चंचल कटाक्षवाली चारुहासिनी नामथी यह सब पापोंसे युक्त कभी और देश में जाती भई ११ वहांपर समुद्र के संगम में मनुष्यों की आकांक्षा कर देवस्थान में जातीभई और वहांपर क्षणमात्र बैठकर पानखाकर १२ बचेहुए चूर्णको महलकी भीतिमें कौतुकसे लगादेती भई और तिस पीछे व्यभिचारी पुरुषकी कांक्षायुक्त होकर धनके लिये नगरको जातीभई १३ वहांपर किसी व्यभिचारी के साथ सहसा से संकेत करतीभई तो रात्रिमें विमोहित होकर वेश्या तो वन

में संकेतमें गई १४ परन्तु वैश्य संकेत में नहीं गया तब यह देखकर शंकायुक्त हुई कि मेरा कान्त क्यों नहीं आया क्या सर्प और व्याघ्रों ने तो नहीं खालिया १५ कामसे विह्वल क्या संकेत को छोड़कर चलागया क्या और स्त्री के साथ तो नहीं अभिलाषायुक्त हुआ १६ यह हृदयके बीचमें शोचती हुई कोटके रक्षा करनेवाले के डरसे और अन्धकार से राह न दिखलाई देने से नगरमें नहीं गई १७ कि इसी अन्तरमें कालरूपी देवका भेजा हुआ कामरूपी व्याघ्र भूंखसे युक्त होकर वहां आकर तिस वेश्याको मारडालता भया १८ तब भयानक यमराज के दूत पर्वत के समान अंगवाले तिस पापिनी के लिये आते भये १९ जिनके टेढ़े पांव, टेढ़े मुख, ऊंची नाक और बहुत डाढ़ें थीं वे चमड़े की रस्सी और मुद्गरोंको लेकर तिस वेश्याको २० उन्मत्त होकर चमड़े की रस्सियों से बांधते भये तब शंख, चक्र, गदा और पद्मके धारण करनेवाले २१ दूत भक्तवत्सल भगवान् ने भेजे जो कि श्याम मेघों के समान रंगवाले, कमलके समान प्रकाशित मुखवाले, २२ श्रेणी के धारण करनेहारे, पवित्र नासिका वाले, सुन्दर कुण्डलों से भूषित थे तब महात्मा विष्णुजी के दूत राहमें वेश्या को लिये जाते हुए यमराज के दूतों को देखकर २३ उनसे बोले कि तुम विकृत आकारवाले कौन हो कर्बुर की नाईं दिखलाई दिये हो इस उत्तमा विष्णुजीकी प्यारीको लेकर कहां जावोगे ये विष्णुदूतों के वचन सुनकर ते यमदूत शीघ्रता से जाते भये २४ तदनन्तर क्रोधयुक्त विष्णुजी के महाबली दूत संसार के प्रभु यमराजजी के दूतों को मारनेलगे २५ करोड़ सूर्य के समान दीप्ति वाले चक्रादि शस्त्रसमूहों से मारेगये सब यमराजजी के दूत रोते हुए भागकर २६ डरसमेत होकर सब वृत्तान्त यमराजजी से कहते भये तब यमराजजी भी कथा को सुनकर चित्रगुप्त से बोले २७ कि हे मन्त्रिन्! किस पुण्यसे वेश्या मुक्तिको प्राप्त होगई यह पूछते हुए मुझसे सब यथोचित कहो २८ तब चित्रगुप्त बोले कि हे लोकों के स्वामी! तिस वेश्याने जन्मसे लेकर बहुतसे पाप इकट्ठे किये हैं अब कुछ उसके पुण्यको सुनिये २९ हे धर्मराज! एक समय में

सब गहनों से भूषित वेश्या धन की इच्छासे व्यभिचारी पुरुषों की आकांक्षा कर किसी पुरी को शीघ्रही जातीभई ३० और तहां पर तिस देवस्थान में स्थित होकर पान खाकर तिस बचे हुए चूर्ण को कौतुकसे भीतिमें लगादेती भई है ३१ तिसी पुण्यके प्रभावसे वेश्या पापरहित होकर तुम्हारे दण्डसे निकलकर वैकुण्ठको जाती है ३२ सूतजी बोले कि हे शौनक! ये चित्रगुप्त के वचनसुनकर यमराजजी और उनके दूत और व्यापारमें चित्त देते भये और वह वेश्या ३३ राजहंसयुक्त सुन्दर रथपर चढ़कर विष्णुजी के दूतों से वेष्टित होकर विष्णुलोक को जातीभई ३४ और वहांपर करोड़ कुलसे युक्त होकर श्रीविष्णुजी की आज्ञासे महलमें स्थित होकर अनेक प्रकार के भोगोंको करती भई ३५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो भक्तिसे भगवान् के स्थानमें यत्नसे चूर्ण देताहै तो नहीं जानते उसकी क्या पुण्य होती है ३६ जो भक्तिसे इस अध्यायको पढ़ता वा आदरसे सुनताहै वह सब पापोंसे छूटकर भगवान् के स्थान को जाताहै ३७॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे ब्रह्मनारदसंवादे षष्ठोऽध्यायः ६॥

सातवां अध्याय

श्रीराधाष्टमी का माहात्म्य वर्णन॥

शौनकजी बोले कि हे महाबुद्धिमान्! हे सुन्दरबुद्धियुक्त सूतजी! दुस्तर संसारसागर से मनुष्य किस कर्म्म से गोलोक को जाताहै और राधाष्टमी के उत्तम माहात्म्य को कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे महामुने! हे ब्राह्मण शौनक! पूर्वसमयमें इसको नारदजी ने ब्रह्माजी से पूंछा था तिसको संक्षेपसे सुनिये २ नारदजी बोले कि हे पितामह! हे महाबुद्धिमान्! हे सब शास्त्रोंके जाननेवालों में श्रेष्ठ! हे पिताजी! राधाजन्माष्टमी को मेरे आगे कहिये ३ हे विभो! हे द्विज! तिसके पुण्यफल को कहिये किसने पहिले इस व्रत को किया है नहीं करनेवालों को क्या पाप होताहै ४ किस विधिसे कब करना चाहिये और राधाजी कहांसे उत्पन्न हुई हैं यह मूलसे मुझसे कहिये ५ तब ब्रह्माजी बोले कि हे वत्स! राधाजन्माष्टमीको एकाग्र

होकर सुनिये मैं संक्षेपसे कहताहूं और भगवान्के विना सब ६ तिसके पुण्यफल को कहने में कोई समर्थ नहीं है ब्रह्महत्यादिक करोड़जन्म के इकट्ठे किये हुए बड़े पाप ७ तिनके तिसीक्षणमें नाश होजाते हैं जे एकबारभी भक्तिसे करतेहैं मनुष्य हज़ार एकादशी से जिसफल को प्राप्त होताहै ८ तिससे सौगुणा अधिक राधाजन्माष्टमी का पुण्य होताहै सुमेरुपर्वत के बराबर सोना देकर जो फल मिलताहै ९ तिससे सौगुणा अधिक एकबार राधाष्टमी करके मिलताहै मनुष्योंको हज़ार कन्यादानसे जो पुण्यप्राप्त होताहै १० वह राधाष्टमीसे फल प्राप्तहोताहै गंगादिक तीर्थों में स्नानकर जो फल मिलताहै ११ वह फल राधाष्टमीसे मनुष्य पाताहै इसव्रतको जो पापी भी हेला वा श्रद्धासे १२ करताहै तो करोड़कुलसे युक्तहोकर विष्णुजी के स्थानको जाताहै हे वत्स ! पूर्व्वसमय सतयुगमें अत्यन्त सुन्दर, वेश्या, १३ सुन्दर करिहांववाली, हरिणीके समान नेत्रोंसे युक्त, शुभ अंगवाली, पवित्रहाससमेत, सुन्दरबाल और पवित्र कानों वाली लीलावती नामहुई १४ तिसने बहुतसे दृढ़ पापकिये थे एकसमय में धनकी आकांक्षा युक्त होकर यह वेश्या अपने पुरसे निकलकर १५ और नगरमें गई तो वहांपर बहुतसे जाननेवाले मनुष्यों को सुन्दर देवताके मन्दिरमें राधाष्टमीके व्रतमें परायण देखतीभई १६ चन्दन, फूल, धूप, दीप, वस्त्र और अनेक प्रकारके फलों से भक्तिभावोंसे राधाजीकी उत्तममूर्ति को पूजन कररहे हैं १७ कोई गाते, नाचते और उत्तमस्तोत्र कोपढ़रहे हैंकोई ताल, वंशी और मृदङ्ग को आनन्दसे बजारहे हैं १८ तिन तिन को तिसप्रकार के देखकर कौतूहल और नम्रता से युक्त होकर यह वेश्या तिनके समीप जाकर पूंछती भई १९ कि हे पुण्यात्माओ ! आनन्दयुक्त पुण्यवान् आपलोगो ! क्या कररहे हो नम्रतायुक्त मुझसे यह कहिये २० तब पराये कार्य्य और हितमें रत, व्रतमें तत्पर वैष्णव मनुष्य तिस वेश्याके वचन सुनकर कहने का आरम्भ करते भये २१ कि भादों महीनेके शुक्लपक्ष की अष्टमीमें राधाजी जिससे उत्पन्न हुई हैं सोई अष्टमी इस समयमें प्राप्तहुई है तिसको यत्नसे हमलोग कररहे हैं २२

गऊके मारनेसे उत्पन्न पाप, चोरीसे उत्पन्न, ब्राह्मणके मारनेसे उत्पन्न, पराई स्त्रीके चुरानेसे, गुरुजीकी स्त्रीसे भोग करनेसे, २३ विश्वासघात और स्त्रीहत्यासे उत्पन्न पाप ये सब शुक्लपक्षकी अष्टमी करनेवाले मनुष्यों के शीघ्रही नाश होजाते हैं २४ तिनके सब पापनाश करनेवाले वचन सुनकर मैंभी व्रत करूंगी यह वारंवार विचारकर २५ तहांही व्रत करनेवालों के साथ उत्तम व्रतकर निर्मल होकर भाग्य से सांप के काटने से नाशको प्राप्त होगई २६ तब यमराज की आज्ञासे उनके दूत फँसरी और मुद्गर हाथमें लेकर तिस वेश्याके लेनेके लिये आये और अत्यन्त क्लेशसे उसको बांधकर २७ जब यमराजके स्थान ले जानेका मन करतेभये तब विष्णुजी के दूत शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले प्राप्त होगये २८ ये सुवर्णमय, राजहंसों से युक्त शुभ विमानको भी लाये थे फिर शीघ्रतायुक्त विष्णुदूतोंने चक्रकी धाराओं से फँसरी को काटकर २९ तिस पापरहित स्त्रीको रथमें चढ़ाकर मनोहर गोलोक नाम विष्णु जी के पुरको लेगये ३० वहांपर व्रतके प्रसाद से यह वेश्या कृष्ण और राधिकाजी के संग स्थित हुई हे पुत्र ! जो मूढ़बुद्धि राधाष्टमी के व्रतको नहीं करताहै ३१ उसकी सैकड़ों करोड़ कल्पोंमें भी नरकसे निष्कृति नहीं होती है जे स्त्रियां इस राधा और विष्णुजी की प्रीति करनेवाले सब पाप नाश करनेहारे और शुभ देनेवाले व्रतको नहीं करती हैं वे अन्तसमयमें यमराजकी पुरी में जाकर बहुत कालतक नरकमें गिरती हैं ३२। ३३ कदाचित् पृथ्वीमें जन्म पाती हैं तो निश्चय विधवा होती हैं हेवत्स ! एक समयमें पृथ्वी दुष्टों के समूहों से ताड़ित होकर ३४ गऊका रूप धारकर अत्यन्त दुःखित होकर वारंवार रोती हुई मेरे पास आकर अपने दुःखको कहतीभई ३५ तब मैं तिसके वचन सुनकर शीघ्रही विष्णुजी के पास जाकर उनसे पृथ्वी के दुःखसमूहको कहताभया ३६ तब उन्होंने कहा कि हे ब्रह्मन् ! आप देवताओं समेत पृथ्वी में जाइये मैं भी अपने गणों समेत तहांही जाऊंगा ३७ ये भगवान् के वचन सुनकर ब्रह्माजी देवताओंसमेत पृथ्वी में प्राप्त होगये तब कृष्णजी प्राणों से भी प्यारी राधिकाजी को बुलाकर ३८ बोले

कि हे देवि! मैं पृथ्वी में जाताहूं पृथ्वी के भार नाशनेके लिये तुम भी मनुष्यलोकमें चलो ३९ यह सुनकर राधाजी भी पृथ्वीमें भादों के शुक्लपक्षकी अष्टमी तिथिमें ४० दिनमें वृषभानुकी यज्ञभूमि शुद्ध करने में सुन्दररूपयुक्त होकर दिखलाई पड़ीं ४१ तब वृषभानु राजा तिनको पाकर आनन्दयुक्त मन होकर अपने स्थानमें अपनी रानी को लाकर देतेभये तब रानी राधाजी को पालने लगीं ४२ हे वत्स! नारद! यह तुमने जो पूंछा तिसको मैंने तुमसे कहा यह व्रत यत्न से रक्षाके योग्यहै ४३ सूतजी बोले कि हे शौनक! जो धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्षफल के देनेवाले इस व्रतको सुनताहै वह सब पापों से छूटकर अन्तमें भगवान् के स्थानको जाताहै ४४॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे ब्रह्मनारदसंवादे श्रीराधाष्टमीमाहात्म्यं नाम सप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय

समुद्र मथने का उद्योग वर्णन॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी! हे गुरो! पूर्वसमय में देवताओं ने क्यों समुद्र मथाहै यह सुनने को मेरे कौतुक उत्पन्न हुआ है इस से मुझसे कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे ब्रह्मन्! संक्षेपसे समुद्र के मथनेका कारण कहताहूं दुर्वासा से इन्द्रका संवाद हुआहै तिस को सुनिये २ एक समयमें महातपस्वी, महातेजस्वी, महादेवजीके अंशसे उत्पन्न, ब्रह्मर्षि दुर्वासाजी इन्द्रजी के देखनेके लिये स्वर्गको जाते भये ३ तो उस समयमें महामुनिजी हाथी पर चढ़े हुए इन्द्रजी को देखकर कल्पवृक्ष की माला उनको देते भये ४ तब इन्द्र उस माला को लेकर हाथी के मस्तक में पहराकर सेनासमेत आप नन्दनवन को चलेगये ५ तो हाथी उस माला को लेकर तोड़कर पृथ्वी में फेंक देताभया तब महामुनि क्रोधकर इन्द्रसे यह बोले ६ कि तीनों लोकों की लक्ष्मी से युक्त होकर जिससे तुमने मेरा अनादर किया है इससे निस्सन्देह तुम्हारी तीनों लोकों की लक्ष्मी नाश हो-जावे ७ तब शाप को पाकर इन्द्र शीघ्रही फिर अपने पुरको चले

आये तो क्या देखते भये कि संसारों की माता लक्ष्मीजी आपही अन्तर्द्धान होगई ८ लक्ष्मी के अन्तर्द्धान होने में तीनों लोक नष्ट होनेलगे तब भूंख और प्यास से युक्त होकर सब देवता निरन्तर रोतेभये ९ मेघ नहीं बरसते भये तालाब और कुएं और वृक्ष सब सूख गये और वृक्षोंमें फल और फूलहीन होगये १० तब भूंख और प्यासमे पीड़ित सब देवता ब्रह्माजीकी शरण में जाकर उनसे दुःख शोकको कहतेभये ११ देवताओंके वचन सुनकर देवगण और भृगु-आदिक मुनियों समेत ब्रह्माजी क्षीरसमुद्रको जातेभये १२ और क्षीर-समुद्रके उत्तर किनारे ब्रह्माजी अष्टाक्षर मंत्रको जप और जगत्पति विष्णुजी का ध्यानकर पूजन करतेभये १३ तब दयायुक्त प्रभु भग-वान् सब देवताओं के ऊपर प्रसन्न होकर गरुड़पर चढ़कर आते भये १४ जोकि पीताम्बर पहने, चार भुजायुक्त, शंख, चक्र और गदाको धारे, संसारों के स्वामी, कमल के समान नेत्रवाले, विष्णु, संसाररूपी समुद्रके नावरूप, वनमालासे विभूषित, भृगुलता और कौस्तुभमणि छाती में धारण कियेहुए हैं तिनको देखकर आनन्दके आंसुओंसे युक्त होकर देवता १५। १६ जयशब्द से स्तुति और निरन्तर नमस्कार करतेभये तब श्रीभगवान् बोले कि भो देवताओ! वर मांगो किसलिये तुमलोग यहां आये हो मैं वर देनेवाला हूं जो कहोगे वही दूंगा और तरह न होगा १७ तब देवता बोले कि हे कृपालो! हे नाथ! ब्राह्मणके शापसे तीनों लोक सम्पदाओं से हीन होगये हैं देवता, असुर और मनुष्य भूंख और प्याससे व्याकुल हैं १८ इन सब लोकों की रक्षा कीजिये आपकी शरणमें हमलोग प्राप्त हुए हैं तब श्रीभगवान् बोले कि हे देवताओ! ब्राह्मण के शाप से लक्ष्मीजी अन्तर्द्धान होगई हैं १९ जिनकी कटाक्षमात्रसे संसार ऐश्वर्यसंयुक्त होता है तुम सब देवता सोने के पर्वत मन्दराचल को उखाड़कर सर्पराज वासुकिकी रस्सी से लपेटकर मथानी बनाकर दैत्यों समेत होकर क्षीरसमुद्रको मथो २०। २१ तो तिससे संसार की माता लक्ष्मीजी उत्पन्न होंगी तिन्हीं से तुम सब प्रसन्न महाभाग निस्संदेह होजावोगे २२ कच्छपरूप से मैं सबओर पर्वतको धारण

करूंगा ऐसा कहकर विष्णुभगवान्जी अन्तर्द्धान होगये तब सब देवता और असुर समुद्र के मथनेके लिये जातेभये २३ ॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे समुद्रमथनोद्योगोनामाष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय

क्षीरसमुद्र का मथन वर्णन ॥

सूतजी बोले कि हे शौनक ! तब गन्धर्व और दानवोंसमेत सब देवसमूह मन्दराचल को उखाड़कर क्षीरसमुद्र में फेंकदेते भये १ तब सनातन, श्रीमान्, दयालु, संसारके ईश्वर भगवान् कच्छपरूपसे पर्वतकी मूलको पीठपर लेलेते भये २ और अनन्तजीसे लपेटकर देवादिक सब दुग्ध के समुद्रको एकादशीमें मथते भये मथने में प्रथम कालकूट विष निकलता भया तब विष को देखकर सब भागते भये तो तिनको भागतेहुए देखकर महादेवजी यह कहते भये ३।४ कि हे देवसमूहो ! तुमलोग विषको मेरे हाथ में करो मैं शीघ्रही कालकूट महाविष को निवारण करूंगा ५ ऐसा महादेवजी कहकर हृदय में नारायणजी को ध्यानकर महामंत्रको उच्चारण कर भयंकर विषको पीलेते भये ६ तो महामंत्रके प्रभावसे महान् विष पच जाताभया जो मनुष्य हरिजी के अच्युत, अनंत और गोविन्द इन तीन नामोंको प्रयत होकर भक्तिसे जपताहै और तीनों नामों के पहले ओं और अन्तमें नमः यह उच्चारण करता जाताहै तिसको विषभोग अग्निसे उत्पन्न और मृत्युसे डर नहीं होता है ७।८ तदनन्तर प्रसन्नमन होकर देवता क्षीरसागर को मथनेलगे तो अलक्ष्मीजी उत्पन्न हुईं जिनका कालामुख, लालनेत्र ९ रूखे पिंगल बाल और जरती देहको धारेहुई थीं ये लक्ष्मीजी की बहन ज्येष्ठा देवताओं से बोलीं कि मुझको क्या करना चाहिये १० तब देवता दुःख का बर्तनरूप तिन देवीजी से बोले कि हे ज्येष्ठे, देवि ! जिन मनुष्यों के घरमें लड़ाई वर्तमान रहती हो ११ तहांपर स्थान देते हैं अशुभ से युक्त होकर वहां बसो जे मनुष्य झूठ और निष्ठुर वचन कहते हैं १२ और संध्यामें भोजन करते हैं उनके घरमें दुःख देने

वाली तुम टिको और जहांपर मुंड, बाल, भस्म, हाड़, तुष और अंगार रहते हों १३ तहांपर निस्संदेह तुम्हारा स्थान होगा और जे अधम मनुष्य विना पांव धोये भोजन करते हैं १४ तिनके घर में दुःख और दारिद्यके देनेवाली तुम सदैव स्थित हो और बालू, नमक और अङ्गारों से जे दांतधोते हैं १५ तिनके घरमें दुःख देनेवाली तुम लड़ाई के साथ सदैव स्थित रहो और जे अधम मनुष्य छत्राक और शिष्ट बेलको खाते हैं १६ हे पापकी देनेवाली! हे ज्येष्ठे! तिनके घरमें तुम्हारा स्थान हो जे पापबुद्धी मनुष्य तिलपिष्ट, अलाबु, गाजर, पोतिकादल, कलंबुक और प्याजको खाते हैं तिनके घरमें तुम्हारा निस्संदेह स्थान होगा १७। १८ हे अशुभे! जहांपर गुरु, देवता और अतिथियों का यज्ञ और दान न हो और वेदकी ध्वनि भी जहां नहीं हो तहांपर सदैव स्थित हो १९ जहां स्त्री पुरुषों में लड़ाई, पितृ और देवताओंका पूजन न हो और जुंवें में रत हों तहां सदैव स्थित हो २० जहां पराई स्त्री में रत, पराई द्रव्यके हरनेवाले हों और ब्राह्मण, सज्जन और वृद्धोंकी पूजा न होती हो तिस स्थान में पाप और दारिद्यकी देनेवाली आप सदैव स्थित हों २१ इस प्रकार देवता सबकी लड़ाई प्यारीवाली ज्येष्ठाजी को आज्ञा देकर फिर एकाग्र चित होकर क्षीरसमुद्र को मथनेलगे २२॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे सूतशौनकसंवादे समुद्रमथनं नाम नवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय

क्षीरसमुद्र का मथन वर्णन॥

सूतजी बोले कि हे शौनक! तब ऐरावत हाथी, उच्चैःश्रवा घोड़ा, धन्वन्तरि वैद्य, कल्पवृक्ष, सुरभि गऊ और अप्सरा आदिक निकलती भईं १ तदनन्तर द्वादशी में प्रातःकाल सूर्य्य के उदयमें सब लक्षणों से शोभित श्रीमहालक्ष्मीजी उत्पन्न होती भईं २ तब प्रसन्न हुए देवता तिन महादेवी, धर्मकी माता, सब प्राणी और श्रीकृष्णजी के हृदय में स्थानवाली लक्ष्मीजी को देखते भये ३ तदनन्तर

लक्ष्मीजी के भाई चन्द्रमा अमृत से उत्पन्न हुए और भगवान् की स्त्री संसारको पवित्र करनेवाली तुलसीजी उत्पन्न हुईं ४ तब परिपूर्ण मनोरथ होकर देवता तिस पर्व्वत को पहलेकी नाईं स्थापित कर लक्ष्मीमाताजी के पास आकर स्तुतिकर उत्तम श्रीसूक्त को जपतेभये ५ तदनन्तर लक्ष्मी देवी प्रसन्न होकर सब देवताओं से बोलीं कि हे उत्तम देवताओ! मैं वर देनेवाली हूं वर मांगो तुम लोगोंका कल्याण हो ६ तब देवता बोले कि हे कमले देवि! हे सब की माता भगवान् की प्यारी! आपके विना संसार शून्यहै प्राणों की रक्षा कीजिये ७ इस प्रकार देवताओं के कहनेपर नारायणजी की प्यारी महालक्ष्मीजी देवताओंसे बोलीं कि इसीसमय में मैं सब प्राणियों के प्राणोंकी रक्षा करती हूं ८ तब नारायण श्रीमान्, शंख, चक्र, गदाके धारण करनेवाले, दयालु, संसार के ईश्वर, भगवान् सहसासे प्रकट होगये ९ तो हाथ जोड़कर गद्गदवाणी बोलते हुए देवता लोकों के स्वामी के प्रणाम कर स्तुतिकर बोलतेभये १० कि हे विष्णुजी! माता, आपकी प्यारी, अनपगामिनी लक्ष्मीजी को आप संसार की रक्षा के लिये ग्रहण कीजिये जबतक भगवान् प्रतिज्ञा नहीं करतेभये तबतक लक्ष्मीजीही हरिजीसे बोलीं ११ कि हे मधुदैत्यके मारनेवाले! हे नाथ! ज्येष्ठा अलक्ष्मीजी को विवाह न कर तिनकी छोटी बहन मेरे कैसे विवाहकी आप इच्छा करते हैं ज्येष्ठाके स्थित होने में छोटीका विवाह नहीं होना चाहिये १२ सूतजी बोले कि हे शौनक! ये लक्ष्मीजी के वचन सुनकर विष्णुजी देवताओं सहित वेद के वचनके अनुरूप ज्येष्ठा को उद्दालकजी को देतेभये १३ तदनन्तर श्रीमान् नारायणजी लक्ष्मीजीको अंगीकार करतेभये तब सब देवसमूह वारंवार नमस्कार करतेभये १४ तिस पीछे अधिक बलवाले सब देवता सब असुरोंको मारतेभये तो सब राक्षस रोते हुए दशों दिशाओं को चलेगये १५ तो देवता अमृत पीनेके लिये क्रमसे पंक्ति करतेभये और श्रीविष्णुजी की आज्ञा से परस्पर सब बोलतेभये १६ कि तुम देवो ३ मैं नहीं समर्थ हूं ३— १७ तदनन्तर विष्णुजी स्त्रीका रूप धारण कर उठतेभये और सोने

के बर्तनमें अमृत परिवेषण करतेभये १८ हे उत्तम ब्राह्मण ! जब-तक राहु भी अमृत भोजन करताभया तब चन्द्रमा और सूर्य यह कहतेभये कि यह राक्षस छल से आगया है १९ तब जगन्नाथजी क्रोधित होकर उसको सोने के बर्तन से मारतेभये तो उसका शिर पृथ्वी में गिरकर केतुनाम होजाता भया २० तदनन्तर भयसे वि-ह्वल होकर राहु और केतु शीघ्रतासे चलेगये और इस समयमें भी वह दिन प्राप्त होने में वे चन्द्रमा और सूर्य्य के ऊपर क्रोध करते हैं २१ जिस क्षणमें राहु चन्द्रमा वा सूर्य को ग्रास करताहै तो वह क्षण दुर्लभ होताहै सब जल तो गंगाजी के समान होजाता है और ब्रा-ह्मण वेदव्यासजी के समान होजाते हैं २२ जो वायस तीर्थ में स्नान करताहै वह गंगाजी के स्नानके फलको प्राप्त होता है और करोड़ जन्मका इकट्ठा दान नाशरहित पुण्यवाला होजाताहै २३ जड़-समेत पाप नाश होजाताहै फिर करोड़ों यज्ञों के करनेसे क्या है वि-द्यार्थी विद्या को पुत्रकी इच्छा करनेवाला पुत्रको २४ और मोक्षकी इच्छा करनेवाला मोक्षको पाता है और निश्चय मंत्रकी सिद्धि हो-जाती है हे ब्राह्मण ! यह तुम से समुद्र का मथन मैंने कहा २५ ॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे सूतशौनकादिकसंवादे समुद्रमथनं नाम दशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय

लक्ष्मीजी के बृहस्पति के व्रतोंका वर्णन ॥

शौनकजी बोले कि हे साक्षात् भगवान् के स्वरूप वेदव्यासजी के शिष्य ! हे अहंकाररहित ! हे सूत ! हे मनुष्यों के ऊपर कृपा क-रनेवाले ! किससे स्त्री सुभगा और किससे पापिनी और अत्यन्त दुर्भगा होती हैं यह मेरे सुननेकी इच्छाहै यथार्थसे कहिये १।२ और हे अंग ! हे तपोधन ! किससे पति की प्यारी, रूपवती, नेत्रों की अमृतरूप होती हैं और किससे लक्ष्मी उत्पन्न होती है यह भी मुझसे कहिये ३ तब सूतजी बोले कि हे विप्र, शौनक ! यद्यपि यह चरित्र पुण्यकारी और परम दुर्लभ है तथापि संक्षेप से विधना

से तुमसे कहता हूं सुनिये ४ द्वापरयुग में सौराष्ट्र देश का बसनेवाला, वेद वेदांग का पारगामी भद्रश्रवा नाम राजा हुआ है ५ और तिसकी सुरतिचन्द्रिका नाम स्त्री हुई है तिसमें राजाके मनोरम सात पुत्र हुए हैं ६ और सुन्दरी, सत्य बोलनेवाली, श्यामाबाला नाम कन्या हुई है यह कन्या पिता के प्रीति करनेवाली हुई है ७ तदनन्तर एक समय में श्यामाबाला गूढ़, मनोहर, रत्नरूप सखियों के साथ आनंद से सुन्दरवर्णवाली बालुओं में खेलने के लिये ८ परम दुर्लभ कदंब वृक्षके नीचे जातीभई और इसी अन्तर में संसार के तारनेवाली लक्ष्मी जी ९ मनुष्यों के नीति देनेवाली, पलित, अंगयुक्त, ब्राह्मणीका रूप धारण कर आपही आती भई १० और सब मनुष्यों के शिक्षा देनेवाले राजाके नाशके विना किन अत्यन्त क्षुद्रों के घरमें इस समयमें जाऊं ११ यह मनसे चिन्तना कर राजाके स्थान को जाती भई जो स्थान कि सोनेकी भीतियों से युक्त और पताकाओं से अलंकृत है १२ वहांपर सिंहद्वारको नांघ कर द्वारपालन करनेवालों से बोलीं कि हे द्वारमें नियुक्त, शुभलक्षणवाली! द्वारको त्यागकर मुझे जाने दो १३ मैं सुरतिचन्द्रिका रानी के देखने के लिये जातीहूं तिनके कोकिला के समान वचन सुनकर रत्नका दण्ड हाथ में लिये हुई द्वारके रक्षा करनेवाली परम हर्षको प्राप्त होगई १४ और उनसे बोली कि हे वृद्धे! क्या आपका नाम है और आपका कौन पति है रानी के दर्शनमें क्या आपका काम है किसलिये तुम आई हो हे ब्राह्मणी! यह मेरे सुनने में कौतूहल है इससे मुझसे कहिये १५ तब वृद्धा बोलीं कि हे पोष्ये! हे रानीके द्वारकी रक्षा करनेवाली! मेरे आगमन के कारण सुननेको जो तुम्हारे कौतूहलहै तो सुनिये १६ मैं लक्ष्मी के नामसे प्रसिद्ध हूं मेरे प्राणों के ईश्वर भुवनेश नामसे प्रसिद्धहैं द्वारकापुरी में १७ मेरे प्राणों के ईश्वर वर्त्तमानहैं हे रत्नोंका वेत्र हाथमें लेनेवाली! मैं आने के कार्य को इस समयमें तुम्हारे आगे कहती हूं कौतुक समेत सुनिये पूर्व्व समयमें तुम्हारी दुःखिनी रानी वैश्य कुलमें उत्पन्न हुई थी १८। १९ एक दिन स्वामी से पीड़ित होकर इस दुःखिनी स्त्री ने पति से

लड़ाई की थी २० और वारंवार रोकर घरसे बाहर निकल गई थी तिसका रोना सुनकर मैं तिसके पास आई हूं २१ उससे सब वृत्तान्त को पूछकर श्रेष्ठ व्रतको मैं उपदेश दूंगी २२ हमारे उपदेश से वह भी आनन्दसे श्रेष्ठ व्रतको करेगी तिसके प्रसादसे हे द्वारके पालन करनेवाली! वह सुखयुक्त होगी २३ कभी यह वैश्यकुल में उत्पन्न रानी पतिके साथ मृत्युके वश में प्राप्त होगई तब सब पाप करनेवाले इनके लेनेके लिये २४ प्रभु धर्म्मराजजी ने चण्ड आदिक दूतों को भेजा तब यमराजजी की आज्ञा से भयङ्कर यमके दूत २५ उसको चर्म्मकी फँसरी से बाँधकर लोहे के मुद्गर हाथमें लेकर यमराजकी शरणमें लेजाने के लिये उद्यम करते भये २६ उसी अन्तरमें लक्ष्मीजी के विष्णुजी में परायण दूत शङ्ख, चक्र और गदा के धारण करनेवाले लेने के लिये प्राप्त होते भये २७ तिस प्रकार के लक्ष्मीजी के दूतों को देख कर यमराजजी के दूत भाग गये तब लक्ष्मीजी के दूत महात्मा स्वप्रकाश आदिक २८ फँसरी को काटकर राजहंसयुक्त रथ में उनको चढ़ाकर सहसा से आकाशमार्ग्ग होकर लक्ष्मीजी के पुरको जाते भये २९ जितने बार वैश्याने श्रेष्ठ व्रत को तिस काल में किया है तितने हज़ार कल्प लक्ष्मीजी के पुरमें दोनों स्थित होतेभये ३० फिर शेष पुण्यके भोग के लिये इस समय में राजाके वंशमें उत्पन्न हुएहैं राज्य की सम्पत्ति से गर्वित होकर व्रतको इन्हों ने बिसार दियाहै तिससे मैं रानीको तिसी व्रतके उपदेशके लिये आईहूं ३१ तब द्वाःस्था (द्वारके रक्षा करनेवाली) बोली कि हे वृद्धे! किस विधि से किस महीने में श्रेष्ठ व्रतको करै और किस देवताकी पूजा होती है ३२ हे मातः! यह पूंछती हुई मुझसे यथावत् कहने के आप योग्यहैं तब लक्ष्मी जी बोलीं कि हे पोष्ये! (द्वारकी रक्षा करनेवाली) कार्त्तिक महीने के बीतने के पीछे अगहन के आने में बृहस्पति के दिन ३३ पहले पहरमें सब व्रतवालों से युक्त होकर नारायणजी के सहित लक्ष्मीजी को पूजन करै ३४ हे प्रेष्ये! खीरयुक्त मीठे अन्नों और खाँड़ मिले हुए भुक्तोंसे लक्ष्मीजीको प्रसन्न कर फिर यह प्रार्थना करै ३५ कि

हे तीनों लोकों में पूजित ! हे विष्णुजीकी प्यारी लक्ष्मी देवी ! जैसे आप कृष्णजी में अचलहैं तैसे मुझमें स्थित हूजिये ३६ हे ईश्वरी ! हे कमले देवि ! हे पापरहित ! मुझको शरण लीजिये फिर नानाप्रकारकी भेंटकी द्रव्योंसे लक्ष्मीजी को प्रसन्न कर ३७ शास्त्रों से महोत्सवयुक्त देवीको पूजन करै तदनन्तर शेष नैवेद्यको श्रेष्ठ ब्राह्मण, ३८ आप, अपने पति, पुत्र और और भी सेवकों को देवे हे सुंदरि ! अब दूसरे बृहस्पति के दिनमें विशेषता सुनो ३९ गेहूंकी बनीहुई श्रेष्ठ चित्रधूली और आष्टोंसे लक्ष्मी देवी को भक्तिभाव से प्रसन्न करै ४० तीसरे बृहस्पतिके दिन शक्करसंयुक्त दही और भात निवेदन करै और चौथी बृहस्पति में शामाक शालिकासारों से आनन्द से पूजन करै ४१ हे रत्नों का दण्ड हाथ में लेनेवाली ! यत्न से लक्ष्मी देवी को प्रसन्न कर उनकी प्रीतिके लिये ब्राह्मणों को धन से पूजन करै ४२ कपड़े, गहने, भोजन और अनेक प्रकार के फल देवे तब द्वारपालकिनी बोली कि हे अत्यन्त श्रेष्ठ वृद्धे ! आप यहींपर ठहरो मैं सुरतिचन्द्रिका रानी से आपका संदेशा कहकर आपको ले चलूंगी आप क्रोध न करना ऐसा कहकर वह श्रेष्ठ अंगवाली द्वारपालकिनी रानी के पास जाकर ४३ । ४४ शिर में अंजलि धर कर जो लक्ष्मीजी ने कहा था उसको आदि से अन्ततक सब सुरतिचन्द्रिका से कहदिया तब द्वारपाली के वचन सुनकर रानी ४५ । ४६ सुन्दरी, गर्वसमेत, ब्राह्मणी के पास जाकर बोली कि हे वृद्धे ! हे ब्राह्मणि ! आप क्या उपदेश करने के लिये आई हैं ४७ डर छोड़कर सुखपूर्वक बहुत कालतक मुझसे कहिये तब ब्राह्मणी बोली कि रे दुष्टे ! तेरी अनीति देखकर चंचला मैं जानेकी इच्छा करतीहूं परम दुर्लभ व्रत तुझसे नहीं कहूंगी लक्ष्मी के दिन जो चाण्डाल करता है ४८ । ४९ वह मैंने तुझ अभिमानयुक्त के घरमें इस समय में देखा है ये ब्राह्मणी के वचन सुनकर रानी क्रोधसे लाल नेत्र कर ५० वृद्ध ब्राह्मणी को मारती भई तब वृद्धा लक्ष्मीजी रोती हुई भागीं ५१ तदनन्तर तपस्विनी श्यामाबाला खेलती हुई ब्राह्मणी के रोनेके शब्दको सुनकर उनके समीप आकर बोली ५२ कि हे वृद्धे !

तुमको इस प्रकार की व्यथा किसने दी है वह मुझसे कहो तब तिस
के वचन सुनकर शोकसे गद्गद वाणी से ५३ लक्ष्मीजी सब वृत्तान्त
कहती भई हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तब श्यामाबाला परम दुर्लभ व्रत सुन
कर ५४ शास्त्रकी कही हुई विधिसे श्रद्धा और भक्तियुक्त होकर व्रत
करने लगी जब तीन बार पूरे होगये और चौथा बार प्राप्त होगया ५५
तो लक्ष्मीजी के प्रसाद से विवाहकर्म सिद्ध होगया श्रीसिद्धेश्वर
देवराजा अत्यन्त तेजस्वी के ५६ मालाधर नाम पुत्र से विवाह
हुआ तब मालाधरजी श्यामाबालाको लेकर घर चलेगये तदनन्तर
तिसके जाने में कौतुकको सुनिये ५७ हे ब्राह्मण! रानीके घरमें ब-
हुत सी द्रव्य स्थित थी वह सब नहीं जानीगई कि कौन लेगये ५८
तब रानी द्रव्य, बुद्धि और अन्न और कपड़ोंसे हीन होकर बैठी तो
अपनी कन्याके घरको ५९ कुछ माँगने के लिये अपने पतिको भे-
जती भई तब राजा तिस मालाधर के नदीके किनारे गाँव में ६०
कुछ काल में कष्टसे प्रवेश करते भये तो नदी में जल लेने के लिये
श्यामाबाला की दासी आती भई और उन्होंने कृपायुक्त होकर तिन
दुःखियों में श्रेष्ठ से पूँछा ६१ कि मांस रक्तसे हीन, रूक्ष अंग और
बालवाले तुम कौन हो और कहाँसे आये हो यह सब हमसे कहो ६२
तब दरिद्र बोले कि हे दासियो! मैं श्यामाबाला का पिता हूँ सौराष्ट्र
नगरसे आया हूँ यह सब हाल श्यामाबाला के पास जाकर तुम लोग
कहना ६३ ये तिनके वचन सुनकर कौतूहलयुक्त सब दासियाँ प-
रस्पर मुखकर हँसकर अपने पुरको चली गईं ६४ और श्यामाबाला
से जाकर सब वृत्तान्त कहा तब दासियों के ये वचन सुनकर सुन्दरी
श्यामाबाला सुगन्धित फूलोंके तेल, सुन्दर कपड़े, चन्दन, पानकी
बीरी और घोड़ा देकर नौकरों को पिताजी के पास भेजती भई
६५। ६६ तब सब नौकर जाकर उत्तम सुन्दर वेष बनाकर उनको
इन्द्रके मन्दिर के समान श्यामाबालाके मन्दिरको लेआते भये ६७
तब श्यामाबाला दुःखियोंमें श्रेष्ठ पिताजीको घीसमेत शाली अन्नको
यत्नसे भोजन कराती भई ६८ हे तपस्वी! जब चार दिन व्यतीत
होगये तब श्यामाबाला पिता को छिपे हुए बर्तन में स्थित धन

देकर भेजदेतीभई ६६ तब उनके पिता अपने घरमें प्रवेश कर पात्र के भीतर स्थित धनको खोल कर अंगारके समूह देख कर अत्यन्त दुःखित होकर रोनेलगे ७० और फिर घरमें प्राप्त होने के पीछे दुःखयुक्त स्त्रीसमेत होकर कन्याके स्थान जानेके लिये निकल कर तहाँहीं तालाब के किनारे प्रवेश करते भये ७१ तब पतिव्रता श्यामाबाला अपनी प्राणप्यारी माता को बुलवाकर माताके स्नेह से तैसेही पूजन करती भई ७२ हे ब्राह्मण! इसी समय में लक्ष्मीका दिन उत्तम बृहस्पति प्राप्त हुआ तब श्यामाबाला माता को व्रत कराने का मन करती भई ७३ तिनकी माता लक्ष्मीजीके कोपसे युक्त दरीद्रों और बालकों की जूँठनको भोग करती हुई ७४ लक्ष्मीजी के तीन बृहस्पतिवारों को व्यतीत करती भई और चौथे दिन में दृढ़व्रत करती भई ७५ फिर यह रानी सुरतिचन्द्रिका अपने नगर को चली आई तो लक्ष्मीजी के प्रसाद से तैसेही सुन्दर घर देखती भई ७६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! किसी समय में श्यामाबाला ऐश्वर्य देखने की इच्छासे फिर माता के घरको गई ७७ तब श्यामाबाला को दूर से देखकर सुरतिचन्द्रिका क्रोधयुक्त होकर यह कहती भई कि मैं श्यामाबाला का मुख न देखूँगी ऐसा कह कर छिप कर स्थित होती भई ७८ और फिर लक्ष्मीयुक्त अपने घरके भीतर आकर सेंधानमकको लेकर चुपचाप स्थित होरही ७९ तब उस पतिव्रता, साध्वी का स्वामी राजा उससे पूँछताभया कि हे कान्ते! तुम क्या लाईहो यह मेरे आगे कहो ८० तब कांता बोली कि सेंधानमक ले आई हूं भोजनमें दिखलाऊंगी ऐसा कहकर विना नमकके पाक बनाकर ८१ अन्नादिक को मालाधर राजा को देतीभई तब मालाधर राजा नमकके विना व्यंजन को ८२ भोजन कर अप्रसन्नता को प्राप्त हुए तब वह स्त्री नमकको देतीभई तो प्रसन्नमन होकर मालाधर राजा ने भोजन किया ८३ और तिस स्त्री की धन्य धन्य ऐसा कहकर प्रशंसा करतेभये जो स्त्री इस व्रतको बड़े आदरसे नहीं करती है ८४ वह सात जन्ममें दरिद्रा और दुर्भगा होती है और जो इसको एकाग्रचित्त होकर भक्तिसे सुनता है ८५ वह सब पापों से छूटकर लक्ष्मी

जीके लोकको जाताहै और जो इस व्रतकी कथाको न सुनकर व्रत करती है तिसके व्रतका फल निस्सन्देह नाश होजाता है ८६॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे सूतशौनकसंवादे एकादशोऽध्यायः ११॥

बारहवां अध्याय

ब्राह्मणका पालन वर्णन॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी! और किस पुण्यसे पापरहित होकर मनुष्य भगवान् के स्थानको जाताहै यह कृपा करके कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे उत्तम ब्राह्मण! जो मनुष्य ब्राह्मण के धन वा प्राणोंसे प्राणोंकी रक्षा करता है वह विष्णुलोक को जाता है २ पूर्व समय द्वापरयुग में पुत्रहीन, बलवान्, वैष्णव, यज्ञ करानेहारा दीननाम राजा हुआ है ३ एक समयमें यह नम्रतायुक्त राजा गालवमुनिसे पूंछताभया कि हे दयाके समुद्र, मुनियोंमें शार्दूलरूप! किस पुण्यसे निश्चय पुत्र होगा यह मुझसे कहिये मैं आपकी आज्ञा करूंगा जिन मनुष्यों के पुत्र नहीं होता है उनका जीवन निरर्थक होताहै ४। ५ तब गालवमुनि बोले कि हे राजन्! जो तुमने पूंछा है तिस पुत्रकी उत्पत्ति के कारण को मैं संक्षेपसे तुम्हारे आगे कहता हूं एकाग्र चित्त होकर सुनिये ६ हे श्रेष्ठ राजा! नरमेधनाम यज्ञ कीजिये तब सब लक्षण संयुक्त तुम्हारे निश्चय सन्तति होगी ७ तब राजा बोले कि हे ब्राह्मण! हे गुरो! यज्ञों में श्रेष्ठ, महायज्ञ नरमेध कैसे मनुष्यको लाकर करूंगा यह कहिये ८ तब गालवमुनि बोले कि सुन्दर अंग, सुन्दर मुख और सब शास्त्रका जाननेवाला अच्छे कुलमें जो उत्पन्न हो वह यज्ञके लिये समर्थ होगा ९ अंगहीन, काला वर्ण, मूर्ख योग्य नहीं होताहै हे ब्राह्मण! गालवजी के इस प्रकार कहनेमें मनुष्यों का ईश्वर वह राजा १० मुनिजी के वचन कह कर दूतों को भेजता भया और सब शास्त्र के पारगामी गालव इत्यादिक ब्राह्मणों को बहुत द्रव्य देकर यज्ञ करानेके लिये वरण करता भया तदनन्तर राजा की आज्ञा से दूत देश देश को गये ११। १२ और एकाग्रचित्त होकर गांव गांव और शहर में

गये परन्तु कहीं भी न पाते भये तब देश को गये १३ जोकि दश पुर नामवाला और गुणी ब्राह्मणों से युक्तहै जहां की स्त्रियां सुन्दर बाल और हरिणके बच्चेके समान नेत्रोंवाली हैं १४ उन चन्द्रमुखियों को देखकर पुरुष मोहित होजाते हैं तिस मनोरम पुर में कृष्णदेव नाम ब्राह्मण १५ तीन पुत्र और सुशीला स्त्रीसमेत होता भया है यह वैष्णव, प्रिय बोलनेवाला, सदैव विष्णुजीकी पूजामें रत, १६ अग्नि में हवन करनेवाला, पिताका भक्त और वैष्णवों का प्रिय करनेवाला भी हुआ है तदनन्तर ते राजा के दूत उस उत्तम ब्राह्मण से प्रार्थना करते भये १७ कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण, अत्यन्त सज्जन! राजाके सन्ताप नाश करनेवाला पुत्र नहीं है इससे अपने पुत्र को दीजिये १८ और तिसी के लिये नरमेध नाम यज्ञ में दीक्षित हूजिये महायज्ञ में तुम्हारे पुत्रको बलि देने के लिये लेजावेंगे १९ समाहित होकर सोने के चारलक्ष को लीजिये और जो पुत्रकी लालसासे सुखसे नहीं देवोगे २० तो हमलोग राजाकी आज्ञाके करनेवाले हैं बलसे लेजावेंगे दूतोंके वचन सुनकर शोकमें विह्वल ब्राह्मण और ब्राह्मणी २१ संशय युक्त मन होकर प्राणरहित की नाईं होगये और ब्राह्मण राजपुरुषों से बोले कि धन, सोना, जीवन और स्थान से मुझे क्या है २२ हे दूतो! जो तुम लोग शोकरूपी अन्धकारके दूर करनेवाले पुत्रके लेने के लिये जो निश्चय आये हो तो मेरे वचनको सुनो २३ पृथिवी में स्थित होकर को श्रेष्ठ राजा की आज्ञा करने की इच्छा करेगा पुत्रको छोड़कर मुझ वृद्धको ले चलो २४ ये ब्राह्मण के वचन सुनकर क्रोधयुक्त दूत तिसके घर में जबर्दस्ती से सोने को छोड़ देते भये २५ और क्रोध से जब तिस पुत्रके लेने का मन करते भये तब वह ब्राह्मण हाथ जोड़ कर रोकर बोला २६ कि हे मनुष्यो! मेरे पुत्रोंमें ज्येष्ठ पुत्रको छोड़कर दूसरे उत्तम पुत्रको ले जाओ! और वचन कहने को मुखमें न लावो २७ तब ब्राह्मण के वचन सुनकर दूत रोती हुई पतिव्रता ब्राह्मणी से बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मणी! छोटे पुत्र को दीजिये २८ तिन दूतों के ये वचन सुनकर दुःखिनी ब्राह्मणी तिस समय में इस प्रकार भूमिपर

गिरपड़ी जैसे हवा से केला गिरपड़ता है २९ फिर बल से मुद्गर लेकर मस्तकमें अपने मारकर बोली कि हे दूतो! छोटे अपने पुत्रको मैं कभी नहीं दूंगी ३० हे ब्राह्मण! इसी समयमें ब्राह्मण का मँझला पुत्र नम्रतायुक्त होकर रोकर माता पिताके प्रणामकर बोला ३१ कि माता जो विषदेवे और पिता जो पुत्रको बेंचडाले और राजा सर्वस्व हरलेवे तो कौन रक्षा करनेवाला होता है ३२ ऐसा कहकर तिनका पुत्र माता और पिता को मस्तकसे प्रणामकर दूतों के साथ दीक्षित राजा के पास शीघ्रही चलता भया ३३ तदनन्तर ब्राह्मणी और ब्राह्मण पुत्रके विच्छेदसे क्लिष्टमन होकर रोरोकर अन्धे होगये ३४ तदनन्तर वे दूत राह में शिष्ययुक्त और हरिण के बच्चों से सेवित विश्वामित्र मुनिजी के स्थानमें प्राप्त हुए ३५ तब मुनि राजाके दूतों को देखकर आदर समेत पूंछते भये कि तुमलोग कौनहो कहांगये और क्या जीविकाहै यह सब कहिये ३६ तब राजाके दूत बोले कि हे ब्राह्मण! एकाग्रचित होकर सुनिये राजाके पुत्र नहीं होताहै तिसी के लिये राजा नरमेध नाम यज्ञमें दीक्षितहै ३७ तहांपर बलि देनेके लिये इस ब्राह्मणके पुत्रको लिये जाते हैं ये दूतों के वचन सुनकर वह ब्राह्मण दयासमेत होगये ३८ और यह विचारते भये कि मेरे प्राण भी चलेजावें और बालक सुखी होवे तो अच्छा है जे मनुष्य यहांपर बालक, ब्राह्मण और स्वामी के लिये ३९ तृणवत प्राणोंको छोड़देते हैं उनको सनातन लोक मिलते हैं यह अपने अन्तःकरण में विचारकर श्रेष्ठ ब्राह्मण बोले ४० कि यज्ञमें बलि देने के लिये इस ब्राह्मण के बालक को छोड़कर मुझको शीघ्रही ले चलो यह बालक उत्तमहै ४१ इसने संसार में जन्म पाकर सुख नहीं पाया है इससे यह कैसे मरेगा ४२ हे दूतो! घरसे इसके आने में इसके माता पिता दुःखित और भाग्यहीन होकर निश्चय यमराज के स्थानको जावेंगे ४३ इसप्रकार मुनिके वचन सुनकर दूत ब्राह्मण से बोले कि हे ब्राह्मण! हे बुद्धिमान्! दीननाथ राजाकी विना आज्ञाके तुझ वृद्ध को हमलोग कैसे ले जावेंगे इसप्रकार वे दूत कहकर तिस समय में राजाकी पुरीको चलते भये ४४। ४५ तब मुनि दूतसमूहोंके साथ यज्ञ

के स्थानको गये तब दूत राजासे ब्राह्मणके वृत्तान्तको कहते भये ४६ तब राजा शंका युक्त मन होकर मुनिजीसे ये वचन बोले कि हे मुने! हे ब्रह्मन्! जो बलि के विना मेरे यज्ञ करनेमें पुत्र होवे तो ब्राह्मणके पुत्र को लेजाइये ४७।४८ तब मुनि बोले कि हे राजन्! तुम्हारे यज्ञ करने में महापुत्र होगा इसमें तुम्हारे संशय नहीं होवे क्योंकि मेरे दर्शन सफलहैं ४९ ये मुनिजी के वचन सुनकर राजा अत्यन्त आनन्द युक्त होकर सब मुनियों समेत यज्ञमें पूर्णाहुति करते भये ५० तब विश्वामित्र मुनिश्रेष्ठ तिस समय में ब्राह्मण के पुत्रको लेकर दशपुर नाम नगर को जाते भये ५१ और तिसके घरमें जाकर मुनिजी उसके पिता से बोले कि हे ब्राह्मण! हे मुने! तुम घर में स्थित हो और मैं मृतक की नाईं स्थित हूं ५२ तब ब्राह्मण विश्वामित्र जीसे बोले कि हे विप्र! राजा बलसे मेरेपुत्र को ले गये हैं मैं क्या करूं फिर पुत्र के चलेजाने में स्त्री पुरुष हम दोनों के ५३ रोने से नेत्र अन्धे होगये हैं तब मुनियों में शार्दूलरूप विश्वामित्रजी बोले कि पुत्रको देखो और लेवो जब इस प्रकार मुनि ने कहा तो ब्राह्मण और ब्राह्मणी प्रसन्न होकर उसी क्षणसे ५४। ५५ मुनि के वचनकी सिद्धिसे और पुत्रके दर्शन से शीघ्रही देखनेलगे ५६ फिर भ्रमरों के समान नेत्रों से पुत्रके मुखरूपी कमलको बड़ीदेरतक पानकर वारंवार मुनिजी के प्रणाम कर ५७ प्रिय बोलनेवाले ब्राह्मण उनसे बोले कि हे मुने! आपने हम दोनोंको जीवदान निश्चय कियाहै ५८ तिन दोनों के ये वचन सुनकर दया के समुद्र मुनिजी तिनको आशीर्वाद देकर अपने स्थान को चले गये ५९ फिर महाभाग मुनिजी विष्णुजी के परमपद को हाथ में प्राप्त कर देवताओं से भी दुर्लभ तपस्या करते भये ६० फिर कुछ कालके बीतने पर तिस राजाके पुत्र होता भया जो कि सुन्दर और इस प्रकार राज्य के योग्य हुआ जैसे क्षीरसमुद्र में चन्द्रमा हुआहै तब राजा पुत्रके उत्सव में धनों को देकर ६१ शोक रहित होकर कौतुक उत्पन्न होके देवताओं की नाईं पृथ्वी को भोग करते भये—जो प्राण और धन देकर ब्राह्मणों की पालना करताहै ६२ वह फिर लौटने से दुर्लभ विष्णुजी के मन्दिरको जाताहै जे यहांपर

भक्तिसे इसको पढ़ते वा ब्राह्मण से कथा को ६३ आख्यानभर वा एकही श्लोक सुनते हैं वे विष्णुजी के मन्दिरको जाते हैं ६४॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे सूतशौनकसंवादे ब्रह्मखण्डे ब्राह्मणपालनं नाम द्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

तेरहवां अध्याय

भगवान्‌की जन्माष्टमी के व्रतका वर्णन॥

शौनकजी बोले कि हे महाबुद्धिमान् सूतजी! कृष्ण की जन्माष्टमीके उत्तम माहात्म्य को कहकर महासमुद्र से उद्धार कीजिये १ तब सूतजी बोले कि हे द्विज! हे ब्रह्मन्! जो मनुष्य भक्ति से कृष्ण जन्माष्टमी के व्रतको करता है वह करोड़ कुलसे युक्त होकर अन्त में विष्णुजी के पुर को प्राप्त होताहै २ हे उत्तम ब्राह्मण! बुधवार वा सोमवार में रोहिणीनक्षत्र संयुक्त अष्टमी करोड़कुल के मुक्ति देने वालीहै ३ जो महापापों से युक्त होकर भी उत्तम व्रत को करताहै वह सब पापों से छूटकर अन्तमें हरिजी के स्थानको जाताहै ४ जो अधम मनुष्य कृष्णजन्माष्टमी को नहीं करता है वह इस लोक में दुःखको प्राप्त होकर मरकर नरक को जाताहै ५ जो मूर्खा स्त्री कृष्णजन्माष्टमी व्रतको वर्ष वर्ष में नहीं करती है वह भयङ्कर नरक में जाती है ६ जो मूढ़बुद्धि मनुष्य जन्माष्टमी के दिन में भोजन करताहै वह महानरक को भोजन करता है यह मैं सत्यही सत्य कहताहूं ७ हे महाबुद्धिमान्! पूर्वसमय में दिलीप ने सब पाप नाश करनेवाले व्रतको मुनिश्रेष्ठ वसिष्ठजी से पूंछाथा तिसको सुनिये ८ दिलीप बोले कि हे महामुने! भादों महीनेकी कृष्णपक्ष की अष्टमी जिसमें जनार्दन भगवान् उत्पन्न हुए हैं तिसके मैं सुननेकी इच्छा करताहूं कहिये ९ शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले भगवान् विष्णुजी देवकी के पेटमें कैसे क्या करने और किस हेतु से उत्पन्न हुए हैं १० तब वसिष्ठजी बोले कि हे राजन्! स्वर्गको छोड़कर जनार्दनजी कैसे पृथिवी में उत्पन्न हुए हैं तिसको मैं कहताहूं सुनिये ११ पूर्व समय में पृथ्वी कंसादिक राजाओं से पीड़ित अपने अधिकार में मतवाले

कंसदूतसे ताड़ित १२ घूर्णित नेत्र होकर रोती रोती वहां गई जहां पर देवोंके स्वामी पार्वतीजी के पति वृषध्वज महादेवजी स्थित थे १३ हे नाथ! कंससे ताड़ित, विवर्ण और विमानित होकर आंशुओं के जलको वर्षती हुई अपना यह दुःख कहने को गईथी १४ तिस को रोती हुई देखकर कोपसे ओठों को फरकाते हुए पार्वतीजी और सब देवसमूहों से युक्त होकर १५ महादेवजी क्रोधही से ब्रह्माजी के स्थानको गये और वहां जाकर कंसके मारने के प्रयोजन को ब्रह्माजीसे कहते भये १६ कि हे ब्रह्मन्! विष्णुजी समेत होकर आप को उपाय रचना चाहिये महादेवजी के ये वचन सुनकर ब्रह्माजी क्षीरसागर में जहांपर भगवान् शेषजी के ऊपर शयन करते हैं तहां के जाने के लिये कहकर हंसकी पीठपर चढ़कर हरिजी के समीप जाते भये १७। १८ और वहां जाकर बोलनेवालों में श्रेष्ठ ब्रह्माजी महादेव आदिक देवसमूहोंसे युक्त होकर कोमल वाणियों से स्तुति करते भये १९ कि हे लक्ष्मीजी के कान्त! कमलनयन, हरि, परमात्मा और संसारके पालन करनेवाले आपके नमस्कार हैं २० यह तिनकी स्तुति सुनकर जनार्दनजी क्लेशयुक्त मुखवाले सब देवताओं से बोले कि आपलोग किसलिये आये हैं २१ तब ब्रह्माजी बोले कि हे देवताओं में श्रेष्ठ जगन्नाथ देवलोकभावन! जिससे हमलोग आये हैं तिसको कहताहूं सुनिये २२ महादेवजी के वर देने से उन्मत्त दुरासद राजा कंस है तिसके हाथ के घात से पृथ्वी ताड़ित होकर पीड़ित हुई है २३ कंसने महादेवजीसे कहाथा कि हे शंभो! भानजेके विना औरसे मेरा मरण न हो यह उसकी मायासे वंचित होकर आगे महादेवजी ने यही वर दिया था २४ तिससे हे देव! आप गोकुल में जाकर दुरासद कंस के मारने के लिये देवकी के पेट में जन्म लीजिये २५ ब्रह्माजी के कहनेसे भगवान् महादेवजी से बोले कि देवों के स्वामी महादेवजी! पार्वतीजी को दीजिये ये साल भर स्थित होकर चली आवेंगी २६ तब महादेवजीने पार्वती को दे दिया तो पार्वती रक्षाके साथ शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले भगवान् मथुराजी की यात्रा करते भये २७ और वहांपर

गदाधरजी देवकीजी के पेटमें जन्म लेते भये और मृगनयनी पार्व्वती जी यशोदाजी की कोखि में स्थित होती भईं २८ नवमास और नवदिन कोखि में रहकर भादों के महीने के कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि २९ रोहिणीनक्षत्र युक्त, मेघोंसे गर्जित हुई रात्रि में कंस के वैरी, संसारके स्वामी वसुदेवजी के पुत्र उत्पन्न होते भये ३० और नन्दजी की स्त्री वैराटी यशोदाजी कन्याको उत्पन्न करती भई पद्म हाथ में लेनेवाले, कमलनयन, पद्मनाभ पुत्रको ३१ देखकर तिस समयमें वसुदेवजी आनन्दको प्राप्त होगये और कंसके डरसे डरी हुई देवकीजी तिसी समयमें वसुदेवजी से बोली कि हे नाथ! निश्चय आप यशोदाजी के पास जाकर पुत्रको देकर तिनकी कन्या को ले आइये ३२। ३३ देवकी जी के वचन सुनकर दुःख युक्त वसुदेवजी भी बालकको अंकमें लेकर यशोदाजी के सम्मुखको जाते भये ३४ तो तिसकी मध्य राहमें यमुनाजी पड़ीं जोकि जलसे भरी हुई, भयानक, महादीर्घ, गम्भीर जलके पूर को सेवन करनेवाली थीं ३५ इसप्रकार की यमुनाजी को देखकर उनके किनारे स्थित होकर दुःखसे व्याकुल वसुदेवजी अत्यन्त चिन्तासे रोने लगे ३६ कि ब्रह्माजी से भी वंचित होकर मैं क्या करूं, कहां जाऊं और नन्दजी के स्थानको यशोदाजी के पास कैसे जाऊं ३७ फिर हरिजी की मायासे वंचित पिता वसुदेवजी आनन्दसमेत होकर क्षणमात्र यमुनाजी को देखते हुए किनारे स्थित होकर ३८ गांठपर्य्यन्त देखते भये तब इसप्रकार की यमुनाजी को देखकर प्रसन्न होकर जैसे वसुदेव जी उठ कर प्रस्थान करते भये ३९ कि माया करके जगन्नाथजी पिताके कोड़े से जलमें गिरते भये तिस पुत्र को गिरे हुए देखकर दुःखित वसुदेवजी हाहाकार कर ४० फिर तिन विधि से वंचित होकर महोपाय करते भये कि हे लोकोंके नाथ! हे देवताओं में उत्तम! मेरी और पुत्रकी रक्षा कीजिये ४१ पिताका रोना सुनकर कंसके वैरी भगवान् वारंवार कृपासे जलक्रीड़ा कर फिर पिताजी के अंकमें प्राप्त होजाते भये ४२ जैसे तिस कृपासे वसुदेव जी नन्दके स्थानको जाकर यशोदाजीको पुत्र देकर तिसकी कन्या

को लेकर ४३ अपने स्थानमें आकर देवकी जीको कन्या दे देते भये
फिर कंसने यह हाल पाया कि देवकीजी के कुछ उत्पन्न हुआहै ४४
तो उस समयमें उसने दूतोंको पुत्र वा कन्या लेनेके लिये भेजा तो वे
कंसके दूत आकर कन्या लेनेका प्रारम्भ करते भये ४५ बलसे देवकी
और वसुदेवजीसे कन्याको छीनकर लेकर कंसको देदेते भये ४६ तब
कन्याको लेकर राजा कंस डरसहित दुरासद होजाता भया और तपे
हुए सोने के वर्ण के समान, पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखवाली ४७
बिजलीके तुल्य प्रकाशित नेत्रयुक्त, हँसती हुई तिस कन्याको देखकर
कंस राक्षसों को आज्ञा देता भया कि इस कन्याको लेजाकर शिलाके
ऊपर पटक दो ४८ तब वे असुर आज्ञा पाकर कन्याके पटकने में
प्रवृत्त भये तो बिजली के समान शीघ्रतासे गौरीरूप कन्या महादेव
जी के समीप चलकर ४९ बोली कि हे असुरों में उत्तम राजन्! जहां
पर तुम्हारा उत्तम शत्रु है तिसको मैं कहतीहूं सुनिये तुम्हारे नाश
करनेवाला नन्दजी के स्थानमें छिपा हुआहै ५० वसिष्ठजी बोले कि
हे दिलीप! इस प्रकार कहकर वह देवी अपने मन्दिरको चलीगई
तबदेवीके वचन सुनकर राजा कंस अत्यन्त दुःखित होकर ५१ बहन
पूतनासे बोला कि तुम नन्दके मन्दिर को जावो और कपटसे तिस
पुत्रको मारकर चली आवो तुझको बहुत वाञ्छित ५२ दूंगा हे शुभे!
मेरे शत्रु के मारने के लिये अत्यन्त शीघ्र जावो तब आज्ञा पाकर
वह राक्षसी गोकुल के सम्मुख गई ५३ और मायासे सुन्दरी रूप
होकर गोकुलमें प्रवेश करगई और स्तन में विष धारणकर मारने
को प्राप्त होगई ५४ गोपों के घरमें द्वार में लक्षित होकर प्रवेश कर
भीतर जाकर बालक को उठाकर स्तन पिलाकर सद्गति को प्राप्त-
होती भई ५५ तदनन्तर कृष्णजी शकटासुर तृणावर्त्त आदिकों को
मर्दनकर कालीयको दमनकर मथुरापुरीको चले गये ५६ और वहां
जाकर क्रूरकंसको मारकर कंसके मल्लोंको भी जीतते भये हे राजन्!
यह तुमसे विष्णुजी के जन्मके दिनका व्रत कहा ५७ इसके सुनने
से पाप नाश होजाते हैं और करने से क्या होता होगा जो मनुष्य
वा स्त्री इस भगवान्के व्रतको करता है ५८ वह इस जन्म में यथे-

प्सित, अतुल ऐश्वर्य्य को पाताहै धर्म, काम और अर्थ की वांछा
करनेवालों को तृतीया, छठि, अष्टमी, एकादशी और चतुर्दशी पूर्व
विद्धा न करनी चाहिये और यत्न से सप्तमीसंयुक्त अष्टमी वर्जित
होनी चाहिये ५९।६० विना नक्षत्रके भी नवमी संयुक्त अष्टमी करनी
चाहिये उदयमें कुछ अष्टमी हो और सब नवमी जो हो ६१ और
मुहूर्त्तभर भी रोहणीयुक्त हो तो सब अष्टमी होती है अष्टमी रोहिणी
समेत जो बुधवार और ६२ सोमवारमें हो तो करोड़ों और व्रत
करने की कुछ आवश्यकता नहीं है उदय में अष्टमी और नवमी
सोमवार वा बुधवार में ६३ सैकड़ों वर्ष में मिलती वा नहीं मिलती
है विना रोहिणीनक्षत्र के नवमी संयुक्त अष्टमी न करनी चाहिये ६४
सप्तमीविद्धा भी रोहिणी संयुक्त अष्टमी करनी चाहिये कलाकाष्ठा
और मुहूर्त में भी जो कृष्णजी की अष्टमी तिथि हो ६५ नवमी में
वह ग्रहण करनी चाहिये सप्तमी संयुक्त नहीं ग्रहण करनी चाहिये
फिर सोमवार और बुधवार में विशेषकर ग्रहण करनी योग्य है ६६
और फिर नवमी युक्त हो तो करोड़ कुलको मुक्ति देनेवाली है हे
राजेन्द्र! पलमात्र भी सप्तमी के वेधसे अष्टमी को त्याग करदेवे ६७
जैसे मदिरा के बिन्दु से स्पर्श किया हुआ गंगाजी के जलका घड़ा
त्याग करादिया जाता है तब दिलीप बोले कि हे देव! हे महामुने!
किसने पहले इस व्रतको किया किसने प्रकाशित किया क्या पुण्य
और क्या फल है यह सब कहिये ६८ तब वसिष्ठजी बोले कि महा-
राजा चित्रसेन नाम हुएहैं जोकि महा पापपरायण, महान्, अगम्या-
गमनकर ब्राह्मणके सोने को चुरानेवाले, ६९ मदिरामें सदैव तृप्त
और वृथा मांस में रत थे इस प्रकार पाप में युक्त नित्यही प्राणियों के
मारने में रत होकर ७० चाण्डाल और पतितों के साथ सदैव वार्ता-
लाप करते थे इस प्रकारके होकर राजा शिकार खेलने में मन धारण
करते भये ७१ वनमें व्याघ्रको जानकर सब ओरसे आच्छादित होकर
सब वीरों से बोले कि तुम सब सावधान हो ७२ इस व्याघ्रको मैं हीं
मारूं गा जो और कोई इसको मारेगा वह निस्सन्देह मारने योग्य
होगा यह कहकर राजा की मार्ग से जब व्याघ्र जाता भया ७३ तब

लज्जासमेत राजा व्याघ्र के पीछे जाताभया और अनेक प्रकारके क्लेश दुःख से व्याघ्र के मारने में एकाग्रचित्त करता भया ७४ भूख और प्यास से आकुल क्लेशयुक्त होकर सन्ध्या में यमुनाके किनारे जाताभया उस दिन कृष्णजी के जन्मका दिन रोहिणीयुक्त अष्टमी थी ७५ हे राजन्! प्रातःकाल यमुनाजी में कन्या व्रत करती भईं अनेक प्रकारकी भेंट, द्रव्य और सुन्दरधूप, दीप, ७६ चन्दन, फूल, द्रव्य और कुंकुम आदि मनोहर से पूजन करती भईं तब बहुत गुणवाले अन्न को देखकर राजा के भोजन करने का मन होता भया तो स्त्रियों से राजा बोले कि इस समय में अन्न के अभाव से मेरे निश्चय प्राण शीघ्रही निकल जावेंगे तब स्त्रियां बोलीं कि हे पापरहित राजन्! जन्माष्टमी में आपको भोजन न करना चाहिये ७७।७८ जो कृष्ण-जीके जन्ममें भोजन अन्न करताहै वह गीध, गधा, कौवा और गऊ के मांस को निस्सन्देह भोजन करता है ७९ संसार में बसते हुए मनुष्यों के क्या क्या छिद्र नहीं उत्पन्न होते हैं जिसने देहमें प्राण स्थित हुए जयन्तीका व्रत नहीं कियाहै ८० नहीं व्रत करनेवाले को यमराज के स्थान में दण्ड मिलता है और जिसके दिये हुये को पितर नित्यही यथाविधि नहीं ग्रहण करते हैं ८१ और जयंती में भोजन करने से सब पितर गिरादिये जाते हैं यह सुनकर राजा व्रत करताभया ८२ कुछ फूल, चन्दन और कपड़ा लेकर प्रसन्न होकर इस व्रतमें युक्त होताभया और तिथि और नक्षत्रके अन्त में पारण करताभया तो चित्रसेन राजा इस व्रत के प्रभाव से पितरों समेत सुन्दर विमानपर चढ़कर भगवान् के स्थानको जाताभया जो फल मथुराजी में जाकर कृष्णजी के मुखरूपी कमल के दर्शन करनेसे मिलता है ८३। ८४ वह फल कृष्णजीकी जन्माष्टमी के व्रतसे पुरुष को प्राप्त होता है और द्वारका में जाकर संसार के ईश्वर भगवान् के दर्शन करने से जो फल मिलता है वह फल दीनों को कृष्णजन्माष्टमी के व्रत करने से मिलता है ८५॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे हरिजन्माष्टमीव्रतमाहात्म्यं नाम त्रयोदशोऽध्यायः १३॥

चौदहवां अध्याय

ब्राह्मण का माहात्म्य वर्णन ॥

शौनक बोले कि हे महाबुद्धिमान्, दयासागर, सूतजी! सब वर्णों में श्रेष्ठ ब्राह्मण के माहात्म्य को दया करके मुझसे कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे उत्तम ब्राह्मण! सब वर्णों का ब्राह्मण ही गुरु, सब देवताओं के आश्रय, साक्षात् नारायण, प्रभु हैं २ जो पृथ्वी के देवता ब्राह्मण को भक्तिसे भगवान् की बुद्धि से प्रणाम करता है तिस के सम्पदा आदिक बढ़ती हैं ३ जो अभिमान युक्त मनुष्य निन्दा से ब्राह्मण को देखकर नमस्कार नहीं करताहै तिसके शिरको भगवान् सदैव काटने की इच्छा करते हैं ४ जे पापबुद्धि मनुष्य अपराध किये हुए भी ब्राह्मण से वैर करते हैं वे भगवान् से वैर करने वाले जानने योग्य हैं और वे घोर नरक में जाते हैं ५ जो प्रार्थना करने के लिये आये हुए ब्राह्मण को क्रोधसे देखता है तिसके नेत्रों में यमराजजी निश्चय तपी हुई सुई चुभो देते हैं ६ जो मूर्ख अधम मनुष्य ब्राह्मण को डाटता है तिसके मुख में यमराज के दूत तपा हुआ लोहा देते हैं ७ तपस्वी ब्राह्मण निश्चय जिनके स्थानमें भोजन करता है तिनके स्थान में सुपर्व्वाओं समेत आपही विष्णुजी भोजन करते हैं ८ और उनके ब्रह्महत्या आदिक सब पाप नाश होजाते हैं जो मनुष्य कणमात्र भी ब्राह्मण के चरणजल को पी लेताहै ९ और जो भक्तिसे ब्राह्मणके चरण धोये हुए जलको हाथ में लेताहै वह सब पापोंसे छूट जाता है यह मैं तुमसे सत्यही कहता हूं १० पुत्र हीन स्त्री ब्राह्मण के कमलरूपी चरणके सेवने से पुत्रसहित होती है और बालक मरनेवाली के बालक जीते हैं ११ ब्रह्माण्डमें जितने तीर्थ हैं तितने तीर्थ समुद्र हैं और समुद्र में जितने तीर्थ हैं वे ब्राह्मणके चरणों में स्थित हैं १२ वह ब्राह्मणके चरण धोनेवाला सब तीर्थों में स्नान करचुका और सब पापों से छूटचुका है हे शौनक, तपस्वी, श्रेष्ठ ब्राह्मण! ब्राह्मण के चरणजलके पाप नाश करनेवाले माहात्म्य के इतिहास को मैं कहता

हूं सुनिये पूर्वसमयमें बनिये की जीविका में परायण १३। १४ द्वापरयुगमें भीम नाम शूद्र हुआ है यह हजार ब्रह्महत्या करनेवाला, निष्ठुर, सदैव वैश्यकी स्त्रीसे प्रसन्न, महान्, १५ शूद्रके आचार से भ्रष्ट और गुरुजी की स्त्री से भोग करनेवाला हुआ है तिस दुष्टचित्त चोरके पापोंकी गिनती नहीं है प्रत्येक पापको मैं क्या कहूं एक समयमें यह किसी ब्राह्मण के स्थानमें गया १६। १७ और वहां जाकर तिसके घरसे द्रव्य लेनेका मन करता भया तब ब्राह्मणके बाहरके दरवाजे के पास खड़ा होकर १८ तपस्वी ब्राह्मण से दीनता युक्त वचन बोला कि भो स्वामिन्! मेरे वचनको सुनिये मैं आपको दयालुकी नाईं मानता हूं १९ मैं भूंखसे पीड़ित हूं मुझको अन्न दीजिये मेरे प्राण शीघ्रही निकले जाते हैं २० तब ब्राह्मण बोला कि हे भूंखसे पीड़ित! मेरे कुछ वचन को सुनिये मैं रसोई नहीं करसक्ता हूं इससे मुझसे चावलों को लेकर सुख पूर्वक भोजन कीजिये २१ मेरे पिता, माता, पुत्र, भाई, स्त्री नहीं हैं स्त्री, माता और भाई ये सब मुझको छोड़कर मरगये हैं २२ हे अतिथि! मैं अकेलेही कर्महीन, भाग्य रहित घरमें स्थित हूं इससे मैं निश्चय तिसके विना कुछ नहीं जानता हूं २३ तब भीम बोला कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! मेरे भी कोई नहीं है इससे मैं शूद्र होकर आपके स्थानमें सदैव स्थित होकर आपकी सेवा करूंगा २४ सूतजी बोले कि हे तपस्वी, शौनक! ये भीम के वचन सुनकर ब्राह्मण आनन्दसमेत होकर शीघ्रही रसोई बनाकर अन्न देते भये २५ तब भीम भी आनन्द युक्त होकर तिस ब्राह्मण की मनोहर स्नेहयुक्त सेवा करते हुए उनके घरमें स्थित होता भया २६ और आज वा कल्ह इसको मारूंगा इसकी द्रव्य मेरीही है यह निस्संदेह द्रव्य लेनेकी इच्छा करता भया २७ यह हृदय के बीच में विचारकर तिसके चरण धोने आदिक की क्रिया कर चरणजल को शिर में लगाकर पापरहित होगया २८ और चरणजल को आचमन कर कपट से प्रतिदिन शिर में लगाता भया एक समय में कोई चोर द्रव्य लेने के लिये ब्राह्मण के यहां आया २९ तो रात्रि में किवाड़ों को उखाड़कर तिन

के घरके भीतर गया तो मारने के लिये भीमको देखकर दण्ड हाथ में लेकर प्राप्त हुआ चोर ३० भीम के मस्तक को जल्द काटकर भाग गया तदनन्तर विष्णुजी के शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले दूत ३१ पापरहित भीम के लेने के लिये सुन्दर राजहंस युक्त रथ लेकर प्राप्त होगये ३२ तब भीम रथपर चढ़कर निश्चय विष्णुजी के स्थान को जाता भया यह ब्रह्माण का माहात्म्य मैंने तुमसे कहा जो मनुष्य भक्ति से इसको सुनता है तो तिसके पाप नाश होजाते हैं ३३ ॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे सूतशौनकसंवादे ब्राह्मणमाहात्म्यं नाम चतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय

एकादशी का माहात्म्य वर्णन ॥

शौनकजी बोले कि हे महाभाग ! एकादशी के पाप नाश करने वाले माहात्म्य को कहिये एकादशी के व्रत करने से क्या फल होता है और नहीं करनेसे क्या पाप होताहै १ तब सूतजी बोले कि इस समय में मैं एकादशी के माहात्म्य को क्या कहूं एकादशी का नाम सुनकर यमराजके दूत शंकायुक्त होजाते हैं २ जो कि सब प्राणियों के भय करनेवाले हैं इसमें सन्देह नहीं है सब व्रतों में श्रेष्ठ शुभा एकादशी को ३ व्रत कर विष्णुजी को महान् मण्डन और जागरण करे जो मनुष्य तुलसीदलों से निश्चय भगवान् की पूजा करता है ४ वह एक दलसे करोड़ यज्ञ के फलको प्राप्त होता है नहीं भोग करनेवाली स्त्री से भोग करने में जो पाप कहा है ५ वह पाप एकादशी में व्रत करने से नाशको प्राप्त होजाता है हे ब्राह्मण ! जो एकादशी के दिन में घी से पूर्ण दीप देता है ६ वह अपने तेजसे अन्धकार नाशकर अन्तसमयमें विष्णुजीके पुरको प्राप्त होताहै ते देश धन्यहैं और वह राजा धन्यहै ७ जिसकी राज्यमें हरिके दिन में एकादशी का बड़ा उत्सव होता है नारायण जी के शयन और पार्श्व के परिवर्त्तन में ८ और विशेष कर प्रबोधिनी एकादशी में जे

मनुष्य निराहार होते हैं उन पुण्यभागी मनुष्योंको हमारे पास नहीं लाना ६ यह यमराज जी दिनरात दूतोंको आज्ञा देते हैं एकादशी जगन्नाथजी की प्यारी और पुण्यकी बढ़ानेवाली है १० तिसमें अन्न के भोजन करने में भगवान् देहको जलादेते हैं तिनके जीवन, सम्पदा, सुन्दरता और वर्तनको धिक्कारहै ११ जे अत्यन्त पापी एकादशीमें अन्न भोजन करते हैं वे विष्ठाको भोजन करते हैं हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! एकादशी में केवल अन्नमें आश्रित होकर १२ अनेक प्रकारके बहुत पाप स्थित होते हैं जैसे अमावसमें स्त्रियों के भोग करने में बड़ा पाप होताहै १३ तैसेही एकादशी में अन्नके भोजन करने में पाप होताहै रोगी, लँगड़े, खांसी युक्त, पेटही से कोढ़ी १४ वे प्राणी एकादशी में अन्नके भोजन करनेसे निश्चय होते हैं गांवके सुअर, दरिद्र युक्त १५ और एकादशी में भोजन करनेसे राजाके यहां बांधेजाते हैं संसार में जितने पापहैं वे एकादशी में १६ भोजनमें आश्रित होकर स्थित होते हैं और आज्ञासे जल भोजन करनेवालों के सब पाप नाश होजाते हैं और नरकसे निष्कृति होजाती है १७ परन्तु एकादशी में अन्न भोजन करनेवाले मनुष्यों की नरक से निष्कृति नहीं होती है मनुष्य एकादशी में जितने अन्न भोजन करते हैं १८ उसमें प्रत्येक अन्नमें करोड़ ब्रह्महत्याका पाप होताहै हे मनुष्यो! मैं वारंवार कहता हूं सुनो १९ एकादशी के दिन कभी भोजन न करै चन्द्रमा और सूर्य्यके ग्रहणमें गंगादिक तीर्थों में स्नान करनेसे जो फल मिलता है वह फल एकादशी में व्रत कर कमल की मालाओं से भगवान् को पूजन करनेसे मिलताहै २०।२१ हे ब्राह्मण! विधिपूर्वक पारण कर माताके गर्भ में नहीं आताहै एकादशी में भगवान् के स्थान में जो मण्डन करताहै २२ वह श्रेष्ठ गतिको प्राप्त होकर विष्णुजी के स्थान में स्थित होताहै और जे एकादशी को प्राप्त होकर निराहार होते हैं २३ तिनका निरन्तर निस्सन्देह विष्णुजी के पुरमें निवास होता है और जिनका मन तुलसीजीकी भक्तिमें अच्छे प्रकार लीन होकर प्रकाशित होताहै २४ ते निस्सन्देह विष्णुजीके परमस्थानको प्राप्त होतेहैं जिनकी पराई द्रव्यों में रुचि नहीं विद्यमान होती है २५ और

जे संतुष्टमन होते हैं तिनका निश्चय विष्णुपुर में वास होता है जे उत्तम काल पाकर प्राणियों को अन्न देते हैं २६ तिनका निस्सन्देह भगवान् के स्थानमें वास होताहै और गऊ, ब्राह्मण, स्वामी और स्त्री की रक्षा करने के लिये जे मनुष्य प्राणों को छोड़ देते हैं तिनका निश्चय विष्णुपुर में वास होताहै प्राणीलोग दशमीविद्धा एकादशी कभी व्रत न करें २७। २८ दुर्जन के संगकी नाईं छोड़ देवें अरुण के उदय के समयमें जो दशमी हो २९ तो द्वादशी का व्रत करना चाहिये त्रयोदशी में पारण करना चाहिये दशमीशेष संयुक्त जो अरुणका उदय हो ३० तो वैष्णव मनुष्यको उस दिन एकादशी का व्रत न करना चाहिये चारघड़ी प्रातःकाल अरुणोदय कहाता है ३१ यह संन्यासियों के स्नानका समय गंगाजी के जल के समान कहा है अरुणोदय के समय में जो दशमी दिखाई पड़े ३२ तो वह एकादशी धर्म, काम और द्रव्य के नाश करनेवाली होती है यह नहीं करनी चाहिये ३३ मदिरा के बिन्दुके पड़जाने से घीके घड़े की नाईं त्याग करदेवे और जो सम्पूर्ण एकादशी हो तो द्वादशी में ३४ संन्यासी लोग दूसरे दिन व्रत करें और पहले दिन एकादशी में गृहस्थ व्रत करे एकादशी कलाभर जो हो और उपरांत द्वादशी न हो ३५ तो व्रत करनेसे सौ यज्ञ करनेका फल होताहै त्रयोदशी में पारण करना चाहिये और जो एकादशी की हानि हो उपरांत द्वादशी युक्त हो ३६ तो जो परमगतिकी इच्छा चाहे तो पूर्ण द्वादशीका व्रत करे जो सम्पूर्ण एकदशी हो और प्रातःकाल दूसरे दिनभी एकादशी ही हो ३७ उपरान्त द्वादशी हो तो सबको पीछे की एकादशी करनी चाहिये जिन मनुष्यों का मन एकादशी में लीन होता है ३८ तिनका निश्चय स्वर्गमें भगवान् के स्थान में वास होताहै एकादशी से श्रेष्ठ परलोक का साधन कुछ नहीं है ३९ बहुत पापोंसे युक्त होकर भी जो एकादशी का व्रत करताहै तो वह सब पापों से छूटकर भगवान् के स्थान को जाताहै ४० और पति समेत जो स्त्री एकादशी का व्रत करती है वह सुन्दर पुत्र युक्त और सुहागवती रहकर मरकर हरिजी के स्थान को जाती है ४१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो भक्तिभावसे भगवान्

के आगे एकादशी में दीप देता है तिसकी पुण्यकी गिनती नहीं है ४२ जो स्त्री अपने पतिसहित एकादशी में जागरण करती है वह पतिसमेत बहुत कालतक हरिजी के स्थान में स्थित होती है ४३ जो भक्तिसे जो कुछ वस्तु एकादशी में भगवान् के अर्थ देताहै तिसकी सदैव नाशरहित पुण्य होती है ४४ पूर्व्वसमय में कांचनाह्वय नगर में वल्लभ नाम हुआ है यह अधिक धनसे कुबेर की नाईं शोभित होता था ४५ तिसकी महारूपवती स्त्री हेमप्रभा नाम हुई इस वल्लभको गरीयान्, मुखर कलियुग का गुण बाधा करता भया ४६ और हेमप्रभा पतिके साथ सदैव लड़ाई करती भई निरन्तर गुरुजनोंको नीचबोली से डाटती ४७ और छिपकर पाप युक्त यह रसोई के बर्तनमें सदैव भोजन करती थी और प्रतिदिन गुरुजनों को जूंठा देतीथी ४८ व्यभिचारी पुरुष में सदा चित्त स्थित रखती और यह कहती थी कि मैं पतिव्रता हूं हे ब्रह्मन्! स्वामी से लड़ाइयों से सदैव मन को उद्वेग करनेवाली भी थी ४९ हे ब्राह्मण ! एक समयमें तिस पापयुक्ता डाटनेवाली को आते हुए देखकर उसका पति उसको मारता भया ५० तब वह स्त्री क्रोधयुक्त होकर शून्य घरमें चली गई और छिपकर सोती भई जल और अन्नको न खाती भई ५१ भाग्य से उस दिन भगवान्के पार्श्वका परिवर्तन, सब पाप नाश करनेवाला एकादशी का व्रत था ५२ तिसके पीछे द्वादशी श्रवणनक्षत्र युक्त की रात्रि में प्राप्त होकर क्रोधयुक्त मनवाली स्त्री दो दिन निराहार कर निर्मल हो जयंती एकादशी की रात्रि में हीं नाशको प्राप्त हो गई ५३।५४ तब यमराज की आज्ञासे उनके दूत भयंकर फँसरी और मुद्गर हाथों में लिये हुए तिसके लेने के लिये प्राप्त हो गये ५५ और जब उसको बांधकर यमराजके स्थान में लेजाने का मन करते भये तब विष्णुजी के दूत शंख, चक्र और गदाको धारण किये हुए आन पहुँचे ५६ और फँसरी को काटकर तिस पाप रहित अत्यन्त निर्मल स्त्रीको सुन्दर रथमें बैठाकर भगवान् के स्थान को चलते भये ५७ तब विष्णुदूतों से वेष्टित होकर वह स्त्री देवताओं से दुर्लभ शुभ भगवान् के मन्दिरमें प्राप्त होजाती भई हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! यह

एकादशी का माहात्म्य तुमसे कहा ५८ जो विना इच्छा के भी करताहै वह भी भगवान् के स्थानको प्राप्त होता है जो मनुष्य एकादशी के दिन दीप देनेके लिये भगवान् के मन्दिर में ५९ जाता है तो वह प्रत्येक पदमें अश्वमेधयज्ञ से अधिक फलको प्राप्त होताहै और जे पुराणों को एकादशी के दिन सुनते वा पढ़ते हैं वे प्रत्येक अक्षर में कपिलागऊके दानसे उत्पन्न फलको प्राप्त होते हैं ६० ॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे सूतशौनकसंवादे ब्रह्मखण्डे हरिवासरमाहात्म्यकथनं नाम पंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय

भगवान् को घी समेत लाई और कौड़ी देने का माहात्म्य वर्णन ॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी ! किस कर्मसे पापोंका नाश होता है और श्रीभगवान् की दया होती है यह कृपा करके कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे शौनक ! सुननेवालों के पाप नाशनेवाले चरित्र को कहता हूं सुनिये जिससे पापों के नाश करनेलावी विष्णुजी की कृपा होती है २ हे ब्राह्मण ! पौर्णमासी में जो भक्तिभाव युक्त होकर अनेक प्रकारकी विधिसे संसार के स्वामी श्रीभगवान्की पूजा करताहै ३ तिसके करोड़ जन्म के इकट्ठे किये हुए पाप नाश होजाते हैं और तिसके ऊपर लक्ष्मीपतिजी की कृपा निश्चय उत्पन्न होती है ४ द्वादशी में जो भक्तिसे ब्राह्मणको अन्नदान करताहै तिस के पाप इस प्रकार नाश होजाते हैं जैसे अरुण के उदय से अन्धकार नाश होजाते हैं ५ हे ब्राह्मण ! जो मनुष्य द्वादशी में श्रीहरिजीको दूध और शक्कर आदिकों से स्नान कराता है तिसके ऊपर शीघ्रही भगवान् प्रसन्न होते हैं ६ जो मन्त्रके विना श्रीहरिजी को पत्थरके सदृश फूल देता है तो देनेवाला नरक को जाता है ७ जो मनुष्य मूर्ख ब्राह्मण को जो पत्थरके समान दान देता है तो उसकी पुण्य नहीं होती है ८ जो मूढ़बुद्धि, विद्यारहित ब्राह्मण मोह से दानको ग्रहण करता है तो जैसे कालाग्नि पचती है तिसी तरह से वह नरक में जाकर पचता है ९ जैसे काठका हाथी और तसवीर का

हरिण होता है तैसे ही विद्या हीन ब्राह्मण होता है ये तीनों नामही धारण करनेवाले हैं १० जैसे राह में स्थित जल पवन और सूर्य से शुद्ध होताहै तैसेही भक्तिसे पार्षद को देखकर तिस देखनेवाले के पाप नाश होजाते हैं ११ जो मनुष्य कुँवार के महीने में पौर्णमासी के दिन श्रीहरिजी को घी समेत लाई और खेलने के लिये कौड़ी भक्तिसे देताहै वह हरिजी के स्थानमें जाता और वहांसे फिर नहीं आताहै और जो मनुष्य मोहसे नहीं देताहै तिसके ऊपर भगवान् प्रसन्न नहीं होते हैं १२।१३ जो मनुष्य कुँवारमें पौर्णमासी के दिन जितनी कौड़ी भगवान् को देता है तितनेही दिन हरिजी के स्थान में निश्चय बसताहै १४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! पूर्वसमयमें करवीरपुर में एक दयारहित कालद्विज नाम शूद्र हुआ है वह पापी, भय करने वाला १५ अपने कार्य्य में निरत और स्वामी के कार्य्य का नाश करनेवाला था एक समय में जब वह नाशको प्राप्त हो गया तो भयङ्कर यमराज के दूत १६ तिसको यमराज के स्थानमें लेजाने के लिये प्राप्त हो गये और बांधकर ले गये तब उसको देखकर यमराज जी चित्रगुप्त मन्त्रीसे पूंछते भये १७ कि हे चतुर चित्रगुप्त मन्त्री! इसका क्या शुभ और अशुभ कर्म विद्यमान है तिसको मूलसमेत कहिये १८ तब चित्रगुप्त बोले कि यह पापी, दुराचारी और स्वामी के कार्य्यका नाश करनेवाला है इसकी अणुमात्र भी पुण्य नहीं है इसको नरक में पचाइये १९ फिर हे राजन्! यह निठुर मनुष्य सौ मन्वन्तर सांपकी योनि में पत्थरके घर में जन्म लेकर निरन्तर स्थित रहे २० सूतजी बोले कि हे ब्राह्मण शौनक! तितने काल तक वह अत्यन्त दुःखित मनुष्य नरकमें गिरा फिर पत्थर के घरमें सांपकी योनि में उत्पन्न हुआ २१ हे ब्राह्मण! एक समय में कुँवार के महीने की पौर्णमासी के दिन यह सांप लाई और कौड़ी बिलसे बाहर फेंकता भया २२ तो वह भगवान् के आगे गिरती भई तब हरिजी दयालु दुःख नाश करनेवाले आपही शीघ्र उसके पापको नाश कर देते भये २३ कदाचित् काल प्राप्त होकर जब वह सांप नाशको प्राप्त हुआ तो उसके लेने के लिये बहुत से यमराज

के दूत प्राप्त होगये २४ और उसको बांधकर जब यमराजके स्थान को लेजानेका मन करते भये तब तो शङ्ख, चक्र और गदाको धारण कर विष्णुजी के दूत भी आनपहुँचे २५ और शीघ्रही फँसरी काटकर तिस पापरहित को सुन्दर रथ में चढ़ा लेते भये तब यमराजके दूत भाग जाते भये २६ तो विष्णुदूतों से वेष्टित होकर सांप विष्णुजी के मन्दिर को जाता भया और वहां पर फिर लौटने से रहित होकर भगवान् के आगे स्थित होता भया २७ हे ब्राह्मण! जो मनुष्य भक्तिसे भगवान्‌को घी समेत लाई और कौड़ी देताहै तिसकी पुण्य को निश्चय मैं नहीं जानता हूं कि क्या होती है २८ और जो इस पाप नाश करनेवाले अध्याय को सुनता है तो उसके श्रीहरिजी की दयासे पाप नाश होजाते हैं २९ ॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे सूतशौनकसंवादे षोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय

भगवान् के चरणोदक का माहात्म्य वर्णन ॥

शौनक बोले कि हे महाबुद्धिमान्, दयासागर, सूतजी! विष्णुजी के चरणोदक के पाप नाश करनेवाले माहात्म्य को मूलसमेत मुझसे कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे ब्रह्मन्, शौनक! सब पाप नाश करनेवाले, शुभ, विष्णुजी के चरणोदक को जो कणमात्र भी प्राप्त होताहै तो वह सब तीर्थ के फलको प्राप्त होताहै २ विष्णुजी के चरणजल को स्पर्श करने से पाप नाश होजाते हैं अकालमृत्यु नहीं होती है और छूनेवाला गंगाजी के स्नानके फलको प्राप्त होता है ३ जो पापी विष्णुजी के चरणोदक को पीता है तो उसके किये हुए देह के स्थित पाप निस्सन्देह नाश होजाते हैं ४ जो मनुष्य भक्तिसे तुलसीदल संयुक्त विष्णुजी के चरणामृत को शिरसे धारण करता है तो वह अन्तमें भगवान्‌के स्थानको जाताहै ५ मेरुपर्वत के बराबर सोना देनेसे जो फल मिलताहै वह फल मनुष्योंको हरिजी के चरणजलके स्पर्श से प्राप्त होताहै ६ हज़ारकरोड़ गौवोंके देनेसे जो फल मनुष्योंको मिलताहै वह फल हरिजी के चरणजलके छूने से

निश्चय प्राप्त होता है ७ हज़ारकरोड़ यज्ञ करने से जो फल मिलता है तो तिससे करोड़गुणा भगवान् के चरणजल के स्पर्श से प्राप्त होता है ८ करोड़ कन्यादान करने से जो फल मनुष्यों को मिलता है तिससे अधिक फल विष्णुजी के चरणजल के छूनेसे होता है ९ करोड़ हाथी और करोड़ ही सप्तिके देनेसे जो फल मनुष्य पाता है वह हरिजी के चरणजलके स्पर्श से भी पाता है १० मनुष्य अन्न समेत सातों द्वीपकी पृथ्वी देनेसे जिस फलको पाताहै तिससे अधिक विष्णुजी के चरणजलके स्पर्श से पाता है ११ हे ब्राह्मण! अधिक क्या कहूं संक्षेप से कहता हूं सुनिये विष्णुजी के चरणजल के स्पर्श से पापी भगवान् के घरको जाता है १२ तब शौनक बोले कि हे सूतजी! पूर्वसमय में किस प्राणी ने भगवान् के चरणजल को स्पर्श और पानकर भगवान् के स्थानको पायाहै यह मेरे ऊपर दया करके कहिये १३ तब सूतजी बोले कि हे उत्तम ब्राह्मण शौनक! पूर्वसमय त्रेतायुग में सुदर्शन नाम पापी ब्राह्मण एकादशी के दिन नित्यही भोजन करता था १४ शास्त्र और व्रतकी भी सदैव निन्दा करता था और अपने पेट के विना और कुछ वह नहीं जानता था १५ एक समय में काल पाकर नाशको प्राप्त होगया तो यमराज के दूत आकर उसको बांधकर यमराजके स्थानको लेगये १६ तिसको क्रोधसे देखकर यमराजजी चित्रगुप्त से बोले कि भो मंत्री! इसकी जो पुण्य वा पाप हो तिसको मूलसे कहिये १७ यह ब्राह्मण महापापी क्रूरकर्म्म करनेवाले की नाईं दिखाई देता है १८ तब चित्रगुप्त बोले कि हे विभो! इसके पापको सुनिये पुण्य तो इसकी अणुमात्र भी नहीं है यह एकादशी के दिन नित्यही भोजन करता रहा है १९ हे राजन्! जो अधम मनुष्य एकादशी में भोजन करता है वह विष्ठाको भोजन करता है और घोर नरकको जाता है २० इससे इसको सौ मन्वन्तर पर्यन्त नरक में स्थान दीजिये तदनन्तर गांवके सुअर की योनि में जन्म होगा २१ सूतजी बोले कि हे ब्राह्मण शौनक! तब यमराजजी की आज्ञासे उनके भयंकर दूतों ने सौ मन्वन्तर पर्यन्त विष्ठा के नरक में तिसको गिराया २२ जब

नरकसे छूटा तो पृथ्वी में गांवका सुअर होकर बहुतकाल तक एकादशी के भोजन करने से नरकको भोजन करता रहा २३ फिर काल प्राप्त होनेपर मरकर कौवेकी योनिमें जन्म लेकर सदैव विष्ठा भोजन करता रहा २४ एक दिन वह कौवा द्वारदेश में स्थित श्री हरिजी के चरणजलको पानकर सब पापों से रहित होता भया २५ और तिसी दिन बहेलिये का कौवा गिरा तब काल में बहेलिये ने कौवेको भी मारडाला २६ तब दिव्य, शुभ, राजहंसों से युक्त रथ वैकुण्ठसे आया तिसपर कौवा चढ़कर भगवान् के मन्दिर को जाता भया २७ यह पाप नाश करनेवाला चरणजल का माहात्म्य कहा जो पापी मनुष्यभी इसको सुनताहै तो उसके पाप नाश होजाते हैं २८॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे सूतशौनकसंवादे चरणोदकमाहात्म्ये सप्तदशोऽध्यायः १७॥

अठारहवां अध्याय

पापों के प्रायश्चित्तों का वर्णन॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी! जो विमोहित होकर नहीं भोग करनेवाली स्त्रीसे भोग करता है तो उसकी शुद्धि किससे होती है यह मूलसे कहिये १ तब सूतजी बोले कि जो उत्तम ब्राह्मण कुत्ता पकानेवाली चाण्डाली से भोग करता है वह तीन व्रतकर तिसपीछे प्राजापत्य करै २ शिखासमेत बाल बनवाकर दो गोदान देकर यथार्थ दक्षिणा देनेसे वह ब्राह्मण शुद्धिको प्राप्त होता है ३ क्षत्रिय वा वैश्य जो चाण्डाली से भोग करता है वह प्राजापत्य, कृच्छ्रकर दो गौवों के जोड़े देवे ४ और जो शूद्र कुत्ते पकानेवाली चाण्डाली से भोग करे तो चारगौवों के जोड़ों को देकर प्राजापत्य व्रत करै ५ जो मोहित होकर माता, बहन, अपनी कन्या और वधूसे भोग करै तो तीनि कृच्छ्र व्रतकर ६ चान्द्रायण भी तीनकर तीन गौवों के जोड़ों को देवे और शिखासमेत बाल बनवाकर तिसपीछे पंचगव्य पीवे ७ और अग्नि में हवन करै तो इस प्रकारसे शुद्ध होजाता है पिता की स्त्रियां, मौसी, ८ गुरुजी की स्त्री, माई, भाईकी स्त्री और अपने

गोत्रसे उत्पन्न स्त्री से जो मोहसे भोग करताहै वह दो प्राजापत्य करै
९ तीन चान्द्रायण भी करै पांचगौवोंके जोड़े और दक्षिणा ब्राह्मणों
को देवे तो निस्सन्देह शुद्ध होजाता है १० जो मूर्ख गऊ से भोग
करता है वह तीन व्रतकर गऊ और अन्न देवे तो निस्सन्देह शुद्ध
होजाता है ११ वेश्या, गदही, सुअरि, बनरिया और भैंस से जो
भोग करता है वह गोबर और जल के कीचड़ में कण्ठपर्यन्त १२
तीन रात्रतक निराहार होकर स्थित रहे तो शुद्ध होजाता है फिर
शिखासमेत बाल बनवाकर तीनरात्र व्रत करै १३ एकरात्र जलमें
स्थित रहे तो निस्सन्देह शुद्ध होजाता है जो मनुष्य कामसे मोहित
होकर ब्राह्मणीसे भोग करताहै वह तीन प्राजापत्य तीनचान्द्रायण
और तीन गौवों को देवे तो शुद्ध होजाता है १४।१५ और ब्राह्मणी
पांचरात्रि पंचगव्य पीवे दो गऊ और दक्षिणा देवे तो निस्संदेह शुद्ध
होजातीहै १६ जो पराई स्त्री से भोग करताहै वह कृच्छ्र सान्तपन करै
जैसे अर्गला है तैसेही स्त्री है तिससेही स्त्री को वर्जित करै १७ जो
मनुष्य वर्णसे बाहरवाली तथा नीच स्त्री से एकबार भोग करता है
वह प्राजापत्य कृच्छ्र कर निस्सन्देह शुद्ध होजाता है १८ अंगार के
समान स्त्री और घी के घड़े के समान पुरुष है इससे स्त्री और दू-
सरा पुरुष ये एकान्तमें कभी स्थित न होवें १९ जो कुल के नाश
करनेवाली स्त्री व्यभिचारी दूसरे पुरुषसे गर्भ को उत्पन्न करती है
वह सर्वथा छोड़देने योग्य है तिसके छोड़नेमें दोष नहीं होता है २०
जो स्त्री घर से अपने भाइयों को छोड़कर चलीजाती है वह नष्ट
और कुलसे भ्रष्ट है उसका फिर संगम नहीं होना चाहिये २१ जो
स्त्री मोहित होकर पराये पुरुषसे भोग करै वह प्राजापत्य कृच्छ्र कर
तिसपीछे पंचगव्य पीवे २२ और दो गऊ देवे तो निस्सन्देह शुद्ध
होजावे हे ब्रह्मन् ! मूर्खा ब्राह्मणी जो मोहित होकर पराये पुरुषसे
२३ भोग करावे तो मनुष्य उसको छोड़ देवें इसमें दोष नहीं होता
है जो कामसे मोहित होकर ब्राह्मण ब्राह्मणी दूसरे की स्त्री से भोग
करताहै वह गऊ और तिलों को देकर निस्सन्देह शुद्ध होता है २४॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे सूतशौनकसंवादेऽष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय

विष्ठा और मूत्रके खालेने और मदिराके स्पर्श आदि पाप-
कर्मोंका प्रायश्चित्त वर्णन ॥

सूतजी बोले कि हे शौनक, ब्राह्मण! अज्ञानसे जो विष्ठा, मूत्र खालेते हैं वा मदिरा को स्पर्श करते हैं तो जिस प्रकार से तिनकी शुद्धि होती है तिसको कहता हूं सुनिये १ हे मुने! दो प्राजापत्य कर तीर्थों में जाकर ग्यारह बैल और गऊ दान देकर शिखा समेत बाल बनवाकर २ चौराहे में जाकर सब प्राजापत्य व्रतकर दो गऊ देकर पंचगव्य पीकर ३ ब्राह्मणों को भोजन करावे तो निस्सन्देह शुद्ध होजाता है ज्ञानसे विपत्तियों में चाण्डाल के अन्न और जल को ४ जो कोई मनुष्य भोजन करलेता है वह कृच्छ्रचान्द्रायणकर शिखा समेत बाल बनवाकर पंचगव्य पीवे ५ और एक, दो, चार गौवें क्रमसे ब्राह्मणों को देवे, शूद्र का अन्न, सूत का अन्न और जल ये खाने योग्य नहीं होते हैं इनको ६ और शूद्रके जूंठेको जो विपत्तियों में ज्ञानसे भोजन करताहै वह दो प्राजापत्य, तीन चान्द्रायणकर ७ दो गऊ देकर पंचगव्य पीवे और अग्नि में हवनकर बहुत से ब्राह्मणों को भोजन करावे तो निश्चय शुद्ध होता है ८ मूसा, न्यौरा और बिलारोंके खाये हुए अन्नको जो खावे तो तिल कुश और जल से छिनककर निस्सन्देह शुद्ध होजाता है ९ जो मनुष्य प्याज, लहसन, शिग्रु, अलाबु, गाजर और मांसको भोजन करता है तो वह चान्द्रायण व्रत करे १० शूद्रके मदिरा और मांस प्रिय होता है इससे उसको चाण्डाल की नाईं नीचकामों में भी न लगावे ११ जे ब्राह्मण की सेवामें अनुरक्त, मदिरा और मांस से वर्जित, दान और अपने कर्म में निरत रहते हैं वे उत्तम शूद्र जानने चाहिये १२ जो मृतक-सूतक में अज्ञान से भोजन करता है वह दशहज़ार गायत्री जप करनेसे पवित्र होता है १३ क्षत्रिय सहस्र गायत्रीसे वैश्य पांचहज़ार गायत्री से शुद्ध होताहै और शूद्र पंचगव्योंसे शुद्ध होता है १४ जो वर्ण घी, जल और दही को नीचके बर्तनमें स्थित हुए को अज्ञान

से पीता है वह प्राजापत्य व्रत करै १५ बहुत दान देवे और अग्निमें विधिपूर्वक हवन करै तो शुद्ध होता है शूद्रोंका व्रत नहीं है दानही से शुद्ध होजाते हैं १६ शिखापर्यन्त बाल बनवाकर दिनरात्रि के व्रतसे नीचों के दण्ड आदिकों से ताड़ित मनुष्य १७ प्राजापत्य वा चान्द्रायण व्रत करै फिर शिखासमेत बालों को बनवाकर पंचगव्य पीवे १८ और दो गऊ देकर अग्निमें अन्न आदिक हवन करै जो इच्छापूर्वक ज्ञानसे घरमें मदिरा का पान होता हो १९ और कोई मनुष्य भोजन करलेवे तो वह मनुष्य कुलसे निकाल देनेके योग्य होता है जो गऊके बीजका मारनेवाला दलका काटनेवाला २० और सोने का चुरानेवाला होता है वह तीन कृच्छ्र प्राजापत्य कर शिखासमेत बाल बनवाकर पंचगव्य पीवे २१ और अग्निमें विधिपूर्वक हवन कर तीनि गऊ देवे तो अन्न और जल उसका ग्रहण करने के योग्य होता है २२ तीनदिन प्रातःकाल और तीनही दिन सांयकाल जो विना मांगे हुए को भोजन करै और तीन दिन नहीं भोजन करै तो यह प्राजापत्य व्रत होता है २३ गऊ का मूत्र, गऊ का गोबर, गऊ का दूध, दही और घी और कुशोंका जल दो दिन पीकर एकरात्र व्रत करै तो यह सब पाप नाश करनेवाला कृच्छ्रसांतपन कहाता है २४ तीनदिन एक एक ग्रास प्रातःकाल और सायंकाल विना मांगे भोजन करै तीनि दिन व्रत करै तो यह अतिकृच्छ्रव्रत होता है २५ तीन दिन गर्म जल, दूध और घी पीवे एकबार दिन में स्नान करै तो पाप नाश करनेवाला तप्तकृच्छ्र होता है २६ बारह दिन भोजन न करै तो पाप नाश करनेवाला कृच्छ्र होताहै और पराकनाम प्रसिद्ध ही है वह भी जानने योग्य है २७ शुक्लपक्षमें एक एक पिण्ड बढ़ावे और कृष्णपक्ष में एक एक घटावे और अमावस में भोजन न करै तो चान्द्रायण व्रत होता है २८ प्रातःकाल एकाग्रचित्त होकर चार पिण्ड और अस्त होते हुए सूर्यों के चारही पिण्ड भोजन करै तो शिशुचान्द्रायण होताहै २९ जो स्त्री कुम्हड़े को काटती है वह तीन दिन पंचगव्य पीकर सोना और कपड़ेसमेत पांच कुम्हड़े देवे तो उसका अन्न और जल ग्रहण करने के योग्य होता है ३० ॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे सूतशौनकसंवादे एकोनविंशोऽध्यायः १९॥

बीसवां अध्याय

राधा और कृष्णजीकी पूजाका माहात्म्य वर्णन ॥

शौनक बोले कि हे सूतजी ! क्या सुकृतकर कलियुग में अन्धे कुएँ के मेढ़क के समान मनुष्य संसाररूपी समुद्रसे तरजाते हैं १ तब सूतजी बोले कि जो स्त्री एकाग्रचित्त होकर राधा और कृष्णजी के प्यारे कार्त्तिक महीने में स्नान कर भक्ति से राधा और कृष्णजी की पूजा करै २ मांस आदिक को छोड़कर पतिकी सेवा में परायण रहे तो वह अत्यन्त दुर्लभ, श्रीहरिजी के गोलोक नाम स्थान को जावे ३ जो कार्त्तिकमें राधा और दामोदरजीको धूप और दीप देती है तो वह पापों से छूटकर विष्णुजी के मन्दिर को प्राप्त होती है ४ जो स्त्री कार्त्तिक में श्रीभगवान् के मन्दिर में कपड़ा राधा और दामोदरजीको देती है वह बहुत समयतक भगवान् के यहां रहती है ५ जो कार्त्तिक महीने में राधा और दामोदरजी को फूल और सुगन्धित माला देती है वह वैकुण्ठ मन्दिर को जाती है ६ और जो स्त्री चन्दन और शक्कर आदिक नैवेद्य राधा और कृष्णजी को देती है वह निश्चय भगवान् के मन्दिर को जाती है ७ और हे ब्रह्मन्! जो स्त्री कार्त्तिक में राधा और कृष्णजी की प्रीति के लिये जो कुछ ब्राह्मणको देती है तिसकी पुण्य नाशरहित होती है ८ जो स्त्री कार्त्तिक में राधा और कृष्णजीकी प्रातःकाल भक्तिसे पूजा नहीं करती है वह बहुत कालतक नरक में प्राप्त रहती है ९ कदाचित् पृथ्वी में जन्म होता है तो प्रत्येक जन्म में विधवा होजाती है और अपने स्वामीको प्यारी नहीं होती है १० पूर्वसमय त्रेतायुग में शंकर नाम शूद्र हुआ था यह सौराष्ट्रदेश में रहता था उसकी स्त्रीका कलिप्रिया नाम था ११ और सदैव जाराकांक्षी (व्यभिचारी पुरुषों की इच्छा करनेवाली) थी पतिको तृणकी नाईं मानती थी और यह पति मेरे योग्य नहीं है मेरा स्वामी परपुरुष है १२ यह मानकर सदैव निश्चयकर तिसको जूंठा भोजन देती थी और महामूर्खा नीचोंके संगसे मदिरा और मांस को खाती थी १३ और निष्ठुर होकर स्वामीको नित्यही

डाटती थी कि यह निश्चय पांवोंकी रस्सी हुआ मर क्यों नहीं जाता है १४ तिसके मरने में मैं इच्छापूर्वक भोग करूंगी यह मूर्खा मनसे विचारकर तिससमय में एक व्यभिचारी पुरुषसे १५ अन्यदेश जाने के लिये संकेतकर रात्रि में सोते हुए अपने स्वामीका तलवारसे गला काट डालती भई १६ और पीछे से संकेतके स्थलको चलीगई तब उस स्थलमें आये हुए व्यभिचारी पुरुषको सिंहने खालिया था १७ उसकी यह व्यवस्था देखकर मूर्खा कलिप्रिया मूर्च्छित होकर गिर पड़ी और बहुत कालतक करुणापूर्वक रोकर श्वास लेकर बोली १८ कि अपने स्वामी को मारकर पराये पुरुष के पास आई परन्तु अभाग्यसे उसको भी सिंह ने खालिया अब मैं क्या करूं कहां जाऊं ब्रह्मासे मैं ठगीगई हूं १९ सूतजी बोले कि हे ब्रह्मन्, शौनक! तदनन्तर कलिप्रिया अपने घरको चली आई और अपने स्वामी के मुख में अपना मुख लगाकर रोती हुई २० बोली कि हा नाथ! हा स्वामिन्! मैंने यह अत्यन्त घोर काम आपके मारनेका किया है मुझसे आप कुछवाणी बोलिये मैं किस लोक को जाऊंगी २१ मुझ अत्यन्त निन्दित ने इच्छापूर्वक आपको डाट बतलाई थी अब हे स्वामिन्! आप कुछ कहते नहीं हो जिससे मुझको पाप न होवे २२ सूतजी बोले कि हे शौनक! तिस पीछे वह स्त्री पति के चरण में नमस्कारकर और नगरको चली गई तो वहां पर बहुत से पुण्य करने वाले मनुष्य २३ वैष्णवों और स्त्रियों को प्रातःकाल नर्मदा नदी में स्नानकर राधा और कृष्णजी की २४ पूजाकर महान् उत्सव कर शंखके शब्दों और चन्दन, फूल, धूप, दीप, कपड़े और अनेक प्रकारके सुगंधित फलों को चढ़ाती हुईं यह देखकर नम्रतायुक्त होकर कलिप्रिया उन स्त्रियों से पूंछती भई कि हे स्त्रियो! यह क्या करती हो २५। २६ तब स्त्रियां बोलीं कि हे माताः! सब महीनों में उत्तम कार्त्तिक महीने में हम लोग शुभ, राधा और दामोदरजी की कल्याण करनेवाली और सब पाप नाश करनेहारी पूजाकर २७ करोड़ों जन्मों के पापों का नाशकर स्थान प्राप्त किया है तब कलिप्रिया भी एकादशी के दिन मांस त्यागकर भगवान् की पूजाकर २८ निर्म्मल

होकर पौर्णमासी में नाश होगई तो यमराज के दूत शीघ्रही क्रोध-युक्त होकर यमराज के स्थान लेजाने के लिये प्राप्त होगये और उसको चमड़ेकी रस्सियों से बांधलेते भये और तिसी समय में सोने के बने हुए विमान को लेकर विष्णुजी के दूत २९। ३० शंख, चक्र, गदा और पद्म धारणकर वनमाला पहनकर प्राप्त होगये और चक्र के धाराओं से काटनेलगे तब यमराज के दूत भाग गये ३१ तो कलि-प्रिया विष्णुदूतों से आच्छादित होकर राजहंसों से युक्त सोने के बने हुए विमान पर चढ़कर विष्णुजी के मन्दिर को जाती भई ३२ और वहांपर मनोवांछित भोगों को भोगकर बहुतकाल स्थित होती भई हे ब्राह्मण! जो स्त्री कार्त्तिक में राधा और भगवान् को पूजन करती है ३३ वह पूजासे पापोंसे छूटकर मनोहर गोलोक को जाती है जो पुरुष और स्त्री एकाग्रचित्त होकर इस चरित्र को भक्तिसे सुनता है तो उस पुरुष और उस स्त्री के करोड़ जन्मों के इकट्ठे किये हुए पाप नाश होजाते हैं ३४॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे सूतशौनकसंवादे राधादामोदरपूजामाहात्म्यकथनं नाम विंशतितमोऽध्यायः २०॥

इक्कीसवां अध्याय

कार्त्तिक महीने की विधि और नियमों का वर्णन॥

शौनक बोले कि हे मुने, सूतजी! सब मासों में उत्तम कार्त्तिक महीने की अच्छी प्रकार से विधि और नियम कहने के आप योग्य हैं १ तब सूतजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! शौनक! एकाग्रचित्त होकर मनुष्य कुँवारकी पौर्णमासी में कार्त्तिक का व्रत करे और एकादशी प्रबोधिनी तक करतारहे २ दिन में सर्वज्ञ मनुष्य उत्तर मुख होकर मल और मूत्र करे मौनहोवे और रात्रि में दक्षिणमुख होकर मल मूत्र करे ३ व्रत करनेवाला राह, जल, गोशाला, श्मशान और बांबीमें मूत्र और दिशा फिरे नहीं ४ और अत्यन्त उत्तम स्थानों में भी मल मूत्र न करे फिर शुद्धमिट्टी लेकर बायां हाथ धोवे ५ जलों और बीससंख्या मिट्टी से शुद्धिके लिये धोवे एक लिंगमें, पांचगुदा

में, दश बायें हाथ में ६ और दोनों पांवों में तीन तीन मिट्टी देवे तदनन्तर मुखकी शुद्धि कर स्नान का संकल्प करे ७ हृदय में दामोदरजी का ध्यानकर फिर यह मंत्र कहे कि हे जनार्दनजी! कार्त्तिक में मैं प्रातःकाल पाप नाश करनेवाला स्नान करूंगा ८ जिसमें दामोदरजी और राधिकाजी प्रसन्न रहें हे श्रीकृष्ण! कमलनाभ, जलमें शयन करनेवाले ९ राधिका समेत आपको नमस्कार है अर्घ ग्रहण कर मेरे ऊपर प्रसन्न हूजिये तिस पीछे स्नान कर विधिपूर्वक तिलक देवे १० ऊर्ध्वपुण्ड्र से हीन होकर जो कुछ कर्म करता है वह सब कर्म निष्फल होता है यह मैं सत्य ही कहता हूं ११ मनुष्यों का जो ऊर्ध्वपुण्ड्र से विना शरीर किया है तिसका दर्शन न करना चाहिये जो दर्शनकरे तो सूर्य्य के भी दर्शनकरे १२ मिट्टी से जिसके मस्तकमें सुन्दर ऊर्ध्वपुण्ड्र दिखाई देताहै तो वह चाण्डाल भी जो हो तो भी शुद्धात्मावाला और निस्सन्देह पूजने योग्य होता है जे अधम मनुष्य छिद्र रहित ऊर्ध्वपुण्ड्र करते हैं १३ तिनके मस्तक में निरन्तर निस्सन्देह कुत्तेका पांव है प्रातःकालके कहेहुए कर्म समाप्त कर भगवान् की प्यारी १४ पाप नाश करनेवाली तुलसीजीको व्रत करने वाला मनुष्य स्थिरमन होकर पूजन करे फिर श्रीहरिजी की पुराण की कथा सुनकर भक्ति से विधिपूर्वक ब्राह्मण को पूजन करै पराया आसन, पराया अन्न, पराई शय्या और पराई स्त्री को १५। १६ सदैव वर्जित करे और कार्त्तिक में विशेषकर वर्जित करे सौवीरक, उर्द, मांस, मदिरा १७ और राजमाष आदिक को कार्त्तिक में नित्यही छोड़देवे जंबीरी नींबू, मांस, चर्ण और बासी अन्न भी त्याग करे १८ धान्यमें मसुरी कही है गौवों का दुग्ध मांस रहित है भूमिसे उत्पन्न नमक है और निश्चय प्राणी का अंग मांस है १९ ब्राह्मण के वेंचे हुए सब रस, छोटे तालाबमें स्थित जल, चारोंकाल में ब्रह्मचर्य और पत्तलों में भोजन २० करे तेलकी मालिश नहीं करे, छत्राक, नाली, हींग, प्याज, पूतिकादल, २१ लहसुन, मूली, सहँजन, तरोंई, कैथा, बैंगन, कुम्हड़ा, कांसे के बर्तन में भोजन, २२ दूसरीबार पकाया हुआ, सूतिका का अन्न, मछली, शय्या, रजस्वला स्त्री, दो तीन

अन्न और स्त्री के भोगको कार्त्तिक का व्रत करनेवाला छोड़ देवे २३ गृहस्थ मनुष्य रविवार में आंवला को सदैव छोड़ देवे कुम्हड़े में धन की हानि होतीहै बृहती में हरिको स्मरण नहीं होता है २४ परवल में वृद्धि नहीं होती है मूली में बल की हानि होती है बेल में कलंकी होता है नींबूमें तिर्यग्योनि होती है २५ ताल में शरीर नाश होता है नारियल में मूर्खता होती है तरोई गऊ के मांस के तुल्य होती है कलिन्दक में गऊका वध होता है २६ शिंबी पाप करनेवाली कही है पूतिका ब्राह्मण के मारनेवाली है वार्ताकी में पुत्रका नाश होता है उर्दमें बहुतकाल रोगी रहताहै २७ मांसमें बहुत पाप होताहै इससे परेवा आदिकों में छोड़ देवे जो मनुष्य भगवान्की प्रीतिके लिये जो कुछ अन्न छोड़ता है २८ वह फिर ब्राह्मण को देकर व्रतके अन्तमें तिसका भोजन करे कार्त्तिक के यथोक्त व्रत करनेवाले मनुष्य को २९ देखकर यमराज के दूत इस प्रकार भागजाते हैं जैसे सिंह को देख कर हाथी भागजाते हैं विष्णुजी का व्रत श्रेष्ठहै तिसके समान सैकड़ों यज्ञ नहीं हैं ३० यज्ञ करके स्वर्गको जाताहै और कार्त्तिकका व्रत करने वाला वैकुण्ठ को जाता है जो मन, वाणी, देह और कर्म से उत्पन्न जो कुछ पाप होता है ३१ वह कार्त्तिक के व्रत करनेवाले को देखकर क्षणमात्र में नाश को प्राप्त होजाता है यथोक्त व्रत करनेवाले कार्तिकके व्रत करनेहारे की पुण्यको चारमुख के ब्रह्माजी भी कहने में समर्थ नहीं हैं जिसको करके सब पाप दशों दिशाओं को भाग जाते हैं ३२।३३ और यह कहते हैं कि कार्त्तिक के व्रत करनेवाले के डरसे हम कहां जावें और कहां ठहरें हे ब्राह्मण! पौर्णमासी में यथाशक्ति अन्न वस्त्रादिक ३४ श्रीहरिजी की प्रीति के लिये ब्राह्मणों को देकर उनको भोजन करावे और व्रत करनेवाला नृत्य और गीत आदिकों से रात्रिमें जागरण करे जो मनुष्य भक्तिसे इसको सुनता है तिसके पाप नाश होजाते हैं ३५॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे सूतशौनकसंवादे ब्रह्मखण्डे एकविंशोऽध्यायः २१॥

बाईसवां अध्याय

तुलसीजी का माहात्म्य वर्णन॥

शौनक बोले कि हे सब जाननेवाले सूतजी! सब प्राणियों के कल्याण के लिये कृपा करके तुलसीजी का सुननेवालों के पाप नाश करनेवाला माहात्म्य कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे शौनक, ब्राह्मण! जिसके परिसर में तुलसीजी का वन स्थित होता है उस घरके तीर्थरूप होने से यमराज के दूत नहीं आते हैं २ तुलसीजी का वन सब पापों का नाश करनेवाला और शुभ है जे श्रेष्ठ मनुष्य लगाते हैं ते यमराजजी को नहीं देखते हैं ३ हे उत्तम ब्राह्मण! जो तुलसी जी को लगाता, पालता, सेवा, दर्शन और स्पर्शन करताहै तिसके सब पाप नाश होजाते हैं ४ जे महाशय कोमल तुलसीदलों से हरिजी को पूजन करते हैं वे कालके स्थान को नहीं जाते हैं ५ गंगा आदिक श्रेष्ठ नदियां विष्णु, ब्रह्मा और महादेव, देव, तीर्थ पुष्करादिक सब तुलसीदल में स्थित होते हैं ६ जो पापी तुलसीदलों से युक्त होकर प्राणों को छोड़ता है वह विष्णुजी के स्थान को जाता है यह मैंने सत्यही कहा है ७ तुलसी की मिट्टीसे लिप्त सैकड़ों पापों से युक्त भी मनुष्य प्राणों को जो छोड़ता है वह भगवान् के मन्दिर को जाता है ८ जो मनुष्य तुलसी की लकड़ी का चन्दन धारण करता है तो उसके अंग में पाप नहीं स्पर्श करताहै और वह परमपद को प्राप्त होता है ९ जो अपवित्र और आचार हीन भी मनुष्य भक्तिसे तुलसी की लकड़ी की माला को कण्ठ में धारण करता है वह हरिजी के स्थान को जाता है १० आंवले के फल की माला और तुलसी के काष्ठसे उत्पन्न माला जिसकी देह में दिखलाई देती है वही निश्चय भागवत मनुष्य है ११ जो विष्णुजी की जूंठी, तुलसीदलसे उत्पन्न माला को कण्ठ में धारण करता है वह विशेषकर देवताओं के नमस्कार करने के योग्य होता है १२ जो फिर तुलसी की माला को कण्ठ में कर जनार्दनजीको पूजन करता है वह प्रत्येक पुष्प चढ़ाने में दशहज़ार गौवों की पुण्य को प्राप्त होता है १३ जे

हैतुक पापबुद्धि तुलसीजी की मालाको नहीं धारण करते हैं वे भगवान्के कोपकी अग्निसे जलेहुए होकर नरकसे नहीं निवृत्त होते हैं १४ महापापोंकी नाश करनेवाली, धर्म, काम और द्रव्यकी देने वाली तुलसी और आंवले की मालाको विशेषकर न त्याग करना चाहिये १५ कलियुगमें मनुष्यों के जिन रोमोंको आंवले की माला स्पर्श करती है तितनेही हजार वर्ष वह मनुष्य भगवान्के स्थानमें बसताहै १६ तुलसी की लकड़ी से उत्पन्न मालाको जो मनुष्य भक्तिसे भगवान् में चढ़ाकर धारण करता है तिसके निश्चय पाप नहीं होताहै १७ यमराजके दूत तुलसी की लकड़ी की माला को देखकर दूरही से इसप्रकार नाश होजाते हैं जैसे पवनसे तुलसीके दल नाश होजातेहैं १८ हे उत्तम ब्राह्मण! जो उत्तम मनुष्य तुलसी के वनमें आंवले के वृक्षकी छायाओं में पिण्ड देताहै तिसके पितर मुक्तिको प्राप्त होजाते हैं १९ जो आंवले के फलको हाथ, मस्तक, गला, दोनों कान और मुख में धारण करता है वह स्वयं भगवान्ही जानने योग्य है २० जो आंवले के फलों से श्रीभगवान् को पूजताहै तिसकी एक बार पूजासे करोड़ जन्मों के इकट्ठे किये हुए पाप नाश होजाते हैं २१ कार्त्तिक के महीने में यज्ञ,देवता,मुनि और तीर्थ सदैव आंवले के वृक्ष में आश्रित होकर स्थित होते हैं २२ जो मनुष्य कार्त्तिक में आंवले के पत्रों और द्वादशी में तुलसीदलोंको तोड़ता है वह अत्यन्त घोर नरकको जाताहै २३ जो कार्त्तिकमें आंवलेकी छायाओं में अन्नको भोजन करता है तिसके वर्ष पर्यन्त के अन्नके संसर्ग से उत्पन्नहुए पाप नाश होजाते हैं २४ जो कार्त्तिकमें तुलसी के वनके मध्य में और आंवले की जड़ में भगवान् को पूजन करताहै वह निश्चय वैकुण्ठको प्राप्त होता है २५ हे उत्तम ब्राह्मण! जो पापी भी तुलसी की जड़ में स्थित जल को भक्तिसे मस्तक में धारण करताहै तो भगवान् के स्थानमें प्राप्त होताहै २६ जो तुलसीदलों से गिरेहुए जलको शिरसे धारण करता है वह सब तीर्थों में स्नानकर अन्त में भगवान्के स्थान को जाता है २७ हे महामुने! द्वापरयुगमें पूर्वसमय में कोई श्रेष्ठ ब्राह्मण हुआ

है वह एक समय में स्नानकर तुलसीजी को जल देकर घर चला गया २८ यह तेजसे आदित्य नाम और पुण्यसे सूर्य्यहीकी नाईं था तब कोई बहुत पापी भक्षण करनेवाला प्याससे व्याकुल होकर आया २९ तब वह तुलसी की जड़से जल पीकर पापरहित होगया फिर अरिमर्दन नाम बहेलिया शीघ्रता से आया ३० और उससे बोला कि अन्न और जलको भोजन कर क्या तू नाश होगया है फिर उस प्राणरहित को बहेलिया ताड़ना करता भया तब यमराजके दूत यमराजकी आज्ञासे क्रोधयुक्त होकर फँसरी और मुद्गर हाथमें लेकर उसके लेने के लिये प्राप्त होगये ३१। ३२ और उसको बांधकर जब लेजाने का मन करते भये तब विष्णुजी के दूत प्राप्त होगये और चमड़े की फँसरी को काटकर रथमें तिसको ३३ शीघ्रही चढ़ा लेते भये तब नम्रतायुक्त होकर यमराजके दूत भगवान् के दूतों से पूंछते भये कि हे सज्जनो! किस पुण्य से इस को आपलोग लिये जातेहो ३४ तब भगवान् के दूत उनसे बोले कि यह पूर्वसमयका राजाहै इसने अधिक पुण्य किया था किसी सुंदरी स्त्रीको हर लिया था ३५ इसी पापसे राजा मरकर यमराज के स्थानमें प्राप्त हुआ तहांपर तुम लोगों ने निश्चय यमराजकी आज्ञासे इसको क्लेश दिये थे ३६ ताम्रमयी स्त्री के साथ तप्त लोहे की शय्या में सोकर वह क्रीड़ा करता भया और बहुत अपने कर्म्म से व्याकुल होताभया ३७ और यमराज की आज्ञा से तपे हुए लोहे के खम्भेको आलिंगनकर स्थित होताभया इस प्रकार राजा बहुत काल दुःख को भोगकर ३८ यमराज के स्थानमें और खारी जल की धाराओं से सींचा जाकर फिर नरकशेष में वारंवार पापयोनि में ३९ जन्म पाकर अपने कर्म्म से बहुत कालतक दुःख भोगकरता रहा अब तुलसी की जड़ के जलको पीकर हरिजी के स्थानको जाता है ४० उस समय में विष्णुदूतों के ये वचन सुनकर यमराज के दूत जैसे आये थे वैसेही चलेगये तब विष्णुजी के दूत तिसके साथ वैकुण्ठ स्थान को गये ४१ हे ब्रह्मन्! हे मुने! हे शौनक! तुलसी जीका पाप नाश करनेवाला माहात्म्य तुमसे कहा जे मनुष्य भक्ति

से सेवा करते हैं तो नहीं जानते उनको क्या फल होता है ४२॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे सूतशौनकसंवादे तुलसीमाहात्म्यं नाम द्वाविंशोऽध्यायः २२॥

तेईसवां अध्याय

विष्णुपंचक का माहात्म्य वर्णन॥

शौनक बोले कि हे मुने, सूतजी! कार्त्तिक के शेष पांच दिन रह जाने के पाप नाश करनेवाले माहात्म्य को कृपा करके कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे शौनक! कार्त्तिक के शेष पांच दिन रह जानेके माहात्म्य को जो तुमने पूंछाहै तिसको मैं कहताहूं सुनिये २ हे मुनिशार्दूल! व्रतों में यह विष्णुपञ्चक श्रेष्ठ है तिसमें जो श्रीहरि और राधाजी को भक्ति से चन्दन, फूल, धूप, दीप, कपड़ा और अनेक प्रकारके फलोंसे पूजन करताहै वह सब पापों से हीन होकर विष्णुजी के स्थान को प्राप्त होताहै ३। ४ ब्रह्मचारी, गृहस्थ वा वानप्रस्थ अथवा संन्यासी विना विष्णुपंचक के किये श्रेष्ठ स्थानको नहीं प्राप्त होते हैं ५ सब पाप नाश करनेवाला, पुण्यकारी, विष्णुपंचक प्रसिद्ध है तिसमें जो स्नान करताहै वह सब तीर्थोंके फलको प्राप्त होताहै ६ भगवान् के आगे और तुलसी जी के समीप जो भक्तिभावसे घी से पूर्ण दीप आकाश में भगवान् की प्रीतिके लिये देता है वह पापी भी विष्णुजी के मन्दिर को जाताहै यह मैंने सत्यही कहाहै ७। ८ जो भक्तिसे भगवान् को शहद, दूध और घी आदिकों से स्नान कराताहै तिस साधु मनुष्य को भगवान् प्रसन्न होकर क्या नहीं देतेहैं ९ जो देवों के स्वामीको सुन्दर अन्नकी नैवेद्य देता है तिसकी पुण्य गिनती करने में ब्रह्माजी भी समर्थ नहीं हैं १० एकाग्रचित्त होकर एकादशी में भगवान् को पूजन कर अच्छी प्रकार गोबर प्राप्तकर मंत्रवत् उपासना करे ११ फिर व्रत करनेवाला द्वादशी में मंत्रवत् गोमूत्र को त्रयोदशी में दूधको और चतुर्दशी में दहीको भोजन करे १२ फिर पापकी शुद्धि के लिये चार दिन लंघनकर पांचवें दिन स्नानकर विधिपूर्वक भगवान् को पूजन कर

१३ भक्तिसे ब्राह्मणों को भोजन कराकर तिनको दक्षिणा देवे फिर रात्रिमें अच्छेप्रकार मंत्रयुक्त पंचगव्यको भोजन करे १४ इसप्रकार करने में जो असमर्थ हो तो फल और मूलको भोजन करे वा यथोक्त विधि से हविष्य भोजन करे १५ जो मनुष्य तुलसीदलों से श्रीहरि जी को कार्त्तिक के अंतके पांच दिनों में पूजन करता है तिसको स्वयं नारायण प्रभु जानना चाहिये १६ पूर्व समय त्रेतायुग में दण्डकर नाम शूद्र हुआहै यह चोरोंकी जीविका में परायण, धर्म की निन्दा करनेवाला १७ झूंठ बोलनेवाला, मित्रका नाश करनेहारा, वेश्याओं के हावभाव कटाक्षों में चंचल, ब्राह्मणों की द्रव्य हरनेहारा, क्रूर, पराई स्त्री के भोगमें रत १८ शरणागतों के मारनेवाला, पाखण्डीजनोंके संगका सेवन करनेहारा, गऊके मांसका भोजन करनेवाला, मदिरा पीनेहारा, सदैव पराई निन्दा करनेवाला, १९ विश्वासघात करनेहारा और जातिवालों की जीविका नाश करनेवाला था तिस प्रकार के दुष्टको देखकर तिसके घर में सब २० उसकी जाति के क्रोधकर आकर उस पापपरायणसे बोले कि रे रे मूढ़! दुराचारी! जिस प्रतिष्ठा को हम लोगों के पुरुषों ने निर्मल वंशमें इकट्ठा की थी तिसको तूने नाश करदिया है २१ इसप्रकार क्रोधही से अयश के डरसे तिस पापियों में श्रेष्ठ कुलके दूषण करनेवाले को सब लोग छोड़ देतेभये २२ तब वह सब ऐश्वर्य नष्ट होनेवाला महावन को चलागया और चोरों के साथ निरन्तर चोरीका कर्म करनेलगा २३ राहमें तिनके चलतेहुए उन्हीं के डरसे कोई राहमें न जाता था तब इन चोरों को कुछ खाने को न मिलनेलगा तो सब भूख से व्याकुल और स्थान को चले गये २४ वहां पर प्रविष्ट होकर वे सब चोर बहुत से पुण्यकारी श्रेष्ठ वैष्णव ब्राह्मणों को आंवलेकी जड़के पास स्थित देखकर २५ उन सबके बीचसे दण्डकर चोर तिन पुण्यात्माओं के पास जाकर बोला २६ कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो! मैं भूख से पीड़ित हूं मेरे प्राण निश्चय निकलने वाले हैं इससे आप लोगों की शरण में प्राप्त हूं कुछ खानेके लिये दीजिये २७ दण्डकरके वचन सुनकर वे धर्म में तत्पर उससे बोले कि सब पाप हरनेवाले, प्रसिद्ध,

विष्णुपंचक २८ भगवान् के दिनमें कैसे तेरी अन्न खाने की वाञ्छा हुई है विशेष कर कहिये इस समय में तेरी क्या संज्ञा हुई है २९ तब आनन्द से दण्डकर उनसे बोला कि मैं दण्डकर नाम ब्राह्मण सब पापों से युक्तहूं मेरा उद्धार कैसे होगा ३० तब वे ब्राह्मण बोले कि तुम श्रेष्ठव्रत विष्णुपञ्चक को करो तब दण्डकर ब्राह्मणों की आज्ञा से विष्णुपंचक व्रतको करतेभये ३१ फिर जब मरे तो जन्म से रहित होकर श्रेष्ठ रथपर चढ़कर श्रीभगवान् के स्थान में जाकर भगवान्ही के रूपको प्राप्त होतेभये ३२ जो मनुष्य इस पाप नाश करनेवाले चरित्र को भक्तिसे सुनता है तिसके करोड़जन्म के पाप तिसी क्षणसे नाश होजाते हैं ३३ ॥

इति श्रीपाद्मे महापुराणे ब्रह्मखण्डे सूतशौनकसंवादे विष्णुपंचकमाहात्म्यं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय

दानों के माहात्म्य का वर्णन ॥

शौनक बोले कि हे विद्वानों में श्रेष्ठ, तत्त्वोंके जाननेवाले, हे महाबुद्धिमान्! सुने, सूतजी! इससमय में मुझसे दानोंके माहात्म्यको क्रमसे कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे मुनिश्रेष्ठ, शौनक! पृथ्वी का दान दानों में उत्तम कहाहै जिसने निश्चय यह दान किया है वह सब दानोंके फलको पाताहै २ जो ब्राह्मणको अन्नसमेत पृथ्वी देताहै वह विष्णुलोक में जबतक चौदहों इन्द्र रहते हैं तबतक सुख भोग करताहै ३ फिर पृथ्वी में जन्म पाकर सब पृथ्वीका राजा होकर बहुत कालतक सब पृथ्वी को भोगकर श्रीभगवान् के घर को जाताहै ४ जो ब्राह्मणको गोचर्ममात्र पृथ्वीको देताहै वह सब पापोंसे रहित होकर भगवान्के स्थान को जाताहै ५ जहांपर सौ गौवें और एक बैल अयंत्रित होकर स्थित होजाते हैं तिस भूमिको महर्षिलोग गोचर्ममात्रा कहते हैं ६ पृथ्वीका लेनेवाला और देनेवाला दोनों स्वर्गको जाते हैं तिससे बुद्धिमान् ब्राह्मण सैकड़ों दान छोड़कर भी पृथ्वी ग्रहण करें ७ जो अज्ञानी ब्राह्मण विमोहित होकर पृथ्वी को

छोड़ देताहै वह प्रत्येक जन्मोंमें अत्यन्त दुःखोंको सेवन करताहै ८ और से भी जो प्राप्त होकर पृथ्वीको ब्राह्मणको देताहै तिसको भगवान् परमपद देते हैं ९ जो अपनी वा पराई दी हुई पृथ्वी को हर लेताहै वह करोड़ कुलों से युक्त होकर अत्यन्त घोर नरकको जाता है १० हे ब्राह्मण! हे मुने! जो देवता और ब्राह्मणकी पृथ्वी को हरलेताहै तिसकी सैकड़ों करोड़ कल्पों में भी निष्कृति नहीं है ११ जो राजा पराई दी हुई पृथ्वीकी रक्षा करताहै तो उसको देनेवालेसे निश्चय करोड़गुणा पुण्य अधिक मिलताहै १२ सातों द्वीपवाली पृथ्वी को देकर जो पुण्य प्राप्त होताहै तिस पुण्यको मनुष्य ब्राह्मण को गऊ देकर प्राप्त होताहै १३ जो दरिद्री और कुटुम्बीको बै[illegible] देताहै वह सब पापोंसे छूटकर महादेवजीके लोकको जाताहै १४ [illegible] तिलके प्रमाण भी सोना ब्राह्मण को देताहै वह करोड़ कुलों[illegible] मुक्त होकर भगवान् के स्थान को जाताहै १५ जो साधु ब्रा[illegible] को चांदी देताहै वह चन्द्रलोकमें प्राप्त होकर सदैव अमृत पी[illegible] १६ जो मूंगा, मोती, हीरा और मणिको देताहै वह स्वर्गलो[illegible] जाता है १७ तुलापुरुष के दानसे जो पुण्य मनुष्यको प्राप्त[illegible]ताहै तिससे करोड़गुणा शालग्रामकी मूर्त्ति देनेसे मिलताहै[illegible] पर्वत, वन और काननों समेत सातों द्वीप की पृथ्वी देने से ज[illegible] पुण्य होता है तिसको शालग्राम की मूर्त्ति देनेवाला निश्चय [illegible] होताहै १९ जो निश्चय शालग्रामकी मूर्त्ति को ब्राह्मणको दे[illegible] तिसने चौदहों भुवन दे डाले हैं २० जो तुलापुरुष का दान [illegible]रताहै तिसका माता के पेटमें फिर जन्म नहीं होताहै २१ जो मन[illegible]य गहनों समेत कन्या को देताहै वह ब्रह्मस्थान को जाताहै और फिर जन्म नहीं होताहै २२ कन्या बेंचनेवाले की फिर नरकसे निष्कृति नहीं होती है और कन्यादान करनेवाले का फिर स्वर्ग से आगमन नहीं होता है २३ जो जूता और छतुरी ब्राह्मण को देता है वह मरकर इन्द्रपुर में जाकर चार कल्पपर्यन्त बसता है २४ हे उत्तम, ब्राह्मण! जो साधु ब्राह्मणको कपड़े देताहै वह स्वर्ग में सुन्दर वस्त्र धारणकर बहुत काल स्थित होताहै २५ जो पुरानी गऊ, जरित कपड़ा और नवीन, रजो-

वती कन्या देताहै वह नरकको जाताहै २६ बुद्धिमान् मनुष्य कन्या बेंचनेवाले का मुख न देखे जो अज्ञानसे देख लेवे तो सूर्यनारायण जीके दर्शन करै २७ फल देनेवाला मनुष्य स्वर्गको जाताहै वहांपर हज़ार कल्प अमृत के समान फलको भोग करताहै २८ जो मनुष्य साग देताहै वह शिवजी के स्थान में जाकर दो कल्पतक देवताओं को भी दुर्लभ खीर को भोजन करताहै २९ घी, दही, माठा और दूध का देनेवाला विष्णुजी के स्थान में जाकर अमृतपान करता है ३० चन्दन और फूलका देनेवाला मनुष्य देवस्थानको जाताहै वहांपर चन्दन और फूलोंसे विभूषित होकर हज़ार युगतक स्थित रहताहै ३१ जो दानों में साररूप शय्यादान को ब्राह्मण को देताहै वह ब्रह्मस्थान में जाकर बहुत समयतक शय्यामें सोताहै ३२ पीठ और दीपका देनेवाला सब पापों से रहित होकर प्रकाशित दीपकी पंक्ति से युक्त होकर स्वर्ग में सिंहासन में स्थित होताहै ३३ जो मनुष्य पान देताहै वह सब पृथ्वीको सुखपूर्वक भोगकर स्वर्ग में देवताओं की स्त्रियों के कोड़े में सोकर पानको खाताहै ३४ जो उत्तम मनुष्य दानोंमें श्रेष्ठ विद्यादानको करता है वह मरकर विष्णु जी के समीप तीनसौ युगपर्य्यन्त स्थित होताहै ३५ तदनन्तर दुर्लभ ज्ञानको पाकर श्रीभगवान्की कृपासे दुर्लभ मोक्षको भी पाता है ३६ जो उत्तम मनुष्य अनाथ और दुःखयुक्त ब्राह्मण को पढ़ा देताहै वह फिर जन्म से रहित होकर श्रीहरिजी के स्थानको जाता है ३७ जो मनुष्य भक्ति और श्रद्धा से युक्त होकर पुस्तक देता है वह प्रत्येक अक्षरमें कोड़ कपिला गऊ के दानसे उत्पन्न पुण्यको प्राप्त होता है ३८ शहद और गुड़का देनेवाला मनुष्य ईख के समुद्रको प्राप्त होताहै नमकका देनेवाला वरुण के लोकको जाता है ३९ तत्त्वके जाननेवाले सब मनुष्योंने अन्न और जलको सब दानों में श्रेष्ठ कहाहै ४० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जिसने पृथ्वीमें अन्न और जल को दियाहै तिसने सब दान दिये हैं ४१ अन्नका देनेवाला मनुष्य प्राणका देनेवाला कहाता है तिससे अन्नका देनेवाला सब दानोंके फलको प्राप्त होता है ४२ जैसे अन्न है तैसे ही जल भी है ये दोनों

बराबरही कहेहुए हैं जल के विना अन्न सिद्ध नहीं होताहै ४३ भूख और प्यास ये दोनों बराबर कहीगई हैं इससे अन्न और जल को बुद्धिमानों ने श्रेष्ठ कहा है ४४ जे उत्तम मनुष्य पृथ्वी में अन्नदान करते हैं वे सबपापों से छूटकर भगवान् के मन्दिरको जाते हैं ४५ भो तपस्वी ब्राह्मण! पृथ्वी में जितने अन्नोंको देता है तितनीही ब्रह्महत्या नाश होजाती हैं ४६ हे शौनक! अन्नके दानोंके देनेवालों और लेनेवालों की देहों को पाप छोड़कर शीघ्रही भागजाते हैं ४७ इससे पापिष्ठों के अन्नों को बुद्धिमान् नहीं ग्रहण करते हैं और जे मूर्ख मोहसे ग्रहण करलेते हैं वे पाप के भागी होते हैं ४८ जो एक वे जलको भूमि में स्थित करदेता है वह सब पापों से छूटकर भगवा[illegible] के मन्दिरको जाताहै ४९ हे श्रेष्ठब्राह्मण! यत्नसे धनका संचय क[illegible] योग्य है और इकट्ठे हुए धनको दानके कर्म में लगाना चाहिये [illegible] जे कृपणतासे धनका नहीं दान करते हैं ते अत्यन्त दुःखी [illegible]कर अन्तमें सब धन छोड़कर द्रव्यरहित चलेजाते हैं ५१ म[illegible]लोक में जे मनुष्य सदैव दान देदेकर दरिद्री होजाते हैं तो वे [illegible] नहीं जानने योग्यहैं महेश्वर वे हैं ५२ साधु संयम से वर्जि[illegible] दया और बन्धुहीन परलोक में नहीं दिया हुआ नहीं स्थित हो[illegible] है ५३ जो मनुष्य धनके स्थित होने में नहीं खाता और न दा[illegible] देताहै वह दरिद्रकी नाईं जानने योग्य है मरकर निःश्वास [illegible]छोड़ता है ५४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तत्त्वके देखनेवालों ने तपस्या[illegible] भी दानको श्रेष्ठ कहाहै इससे यत्नसे दानकर्मको करै ५५ जो [illegible]ता ब्राह्मणको दान नहीं देताहै वह सब प्राणियों के भय देनेवाले घोरनरक को जाताहै ५६ देनेवाला दानको न स्मरण करै और ग्रहण करनेवाला नहीं मांगै तो इन दोनों का जबतक चन्द्रमा और सूर्य रहते हैं तबतक नरक में वास होताहै ५७ और ब्रह्महत्या आदिक जितने निश्चय पाप होते हैं वे दानसे नाश होजाते तिससे दानको करे ५८ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेचतुर्विंशतितमोऽध्यायः २४ ॥

पचीसवां अध्याय

बांचनेवाले के पूजनआदिका फल वर्णन ॥

कि हे सूतजी! लक्ष्मीजी का पद, विष्णुजीका च-
ों का नाश करनेवाला, दुष्टग्रहों का निवारण करने-
ी की समीपता देनेवाला और धर्म्म, अर्थ, काम
ल का देनेहाराहै जो मनुष्य भक्तिसे सुनता है वह
ान् के स्थानको प्राप्त होताहै २ नामके उच्चारण का
बड़ा अद्भुत सुनाहै जिसके उच्चारणही मात्रसे मनुष्य
ाप्त होताहै ३ तिस नाम के कीर्तनकी विधि को इस
सूतजी बोले कि मोक्षके साधन करनेवाले सं-
शौनक! तिसको सुनिये ४ पूर्व्वसमयमें एक
स किनारे बैठेहुए, शान्तमनवाले सनत्कुमार जी
से दजी पूंछतेभये कि अनेक प्रकारके धर्मव्यति-
कर ५। ६ जो इस धर्मव्यतिकर को भगवान् ने
मनुष्य भगवान्के प्यारे! तिसका नाश कैसे होता है
सो कहि- कुमारजी बोले कि हे गोविन्दजी के प्यारे
और भग जाननेवाले नारदजी! तुमने तमसे पर,
मनुष्योंकी जो पूंछा है तिसको सुनिये ८ हे ब्राह्मण!
जे सब आचा मूर्खबुद्धि, व्रात्य, संसार के छलनेवाले,
दंभ, अहंकार, चुगुली में परायण, पापी, निष्ठुर ९ और
जे धन, स्त्री और त होते हैं वे सब अधम होते हैं भगवान्
के चरणकमलों को में शुद्ध होजाते हैं १० हे दयाकी
खानि! तिस देवों के वाले ावर और जंगमकी मुक्ति करने-
हारे, श्रेष्ठ परमेश्वरको रायण मनुष्य अतिक्रमण करते
हैं तिनके निश्चय नामों ११ सब अपराधका करनेवाला
भी भगवान्के आश्रय हो जाताहै जो मनुष्यों में दोषी मनुष्य
भगवान् के अपराधों करे १२ वह जो कभी नामके आश्रय
होताहै तो नामसेही तरजाता सबके मित्र नामों के अपराध से

नरकमें गिरता है १३ तब नारदजी बोले कि हे श्रेष्ठ
गवान्के नामके कौन अपराध करनेवाले हैं जोकि म
को नाश करदेते हैं और प्राकृत को प्राप्त करदेते हैं
सनत्कुमारजी बोले कि हे नारद ! सज्जनों की निन्द
के परम अपराधको विस्तार करता है जिससे प्रसि
होते तो उसकी निन्दा को कैसे सहते हैं शुभ श्री
और सब नाम आदिक को जो इस लोकमें बुद्धिसे
वह निश्चय भगवान् के नामों का अहित करनेवाला
का अपमान, वेद और शास्त्रकी निन्दा, अर्थवाद, भ
में कल्पना और नाम के अपराध की पापबुद्धि जिस
मान होती है तिसकी यमोंसे शुद्धि होती है १६ धर्म
हवन आदिक सब शुभक्रिया की साम्य, प्रमाद, अ
विमुख भी जो शिवनाम अपराध उपदेश न सुने
धम नामके अपराधों को सुनकर भी प्रीति रहित
आदि परम भी अपराध करनेवालाहै १८ हे नार
हादेवजीने कृपाकर मुझसे मुनियों के पर, भगवा
नाम को कहाहै जो यत्नसे सदैव छोड़ने योग्यहै
के अपराधों को जानकर भी सहसासे नहीं
भी क्रोध करनेवाले, अभोजन में परायण
प्राप्त होते हैं १९ हे नारद ! अपराधसे छूट
जपो नामही से तुमको सब प्राप्त होगा तिसको
होगा २० तब श्रीनारदजी बोले कि हे स त्यही सत्य
वैराग्य से रहित, साहसी, देहा जबतक नहीं
हम लोगों के अपराध कैसे छूट और और आप भी
बोले कि हे नारद ! प्रमाद में नाम को जाताहै १३
तरह से सदैव एकशरण होकर ना में किसको दहिने हाथ
अपराधयुक्तों के अविश्रांतिसे प्रयु सको आप कहिये
पापोंको हरते हैं २३ हे ब्राह्मण ! नामही हे शौन
की राह में प्राप्त वा कानों के मूलमें अशुद्ध वा अशुद्ध वाला

हो तो सत्यही तार देताहै वह यदि देह द्रव्य से
और पाखण्ड के मध्यमें निक्षिप्त हो तो शीघ्रही फलको
रता है २४ हे नारद ! यह परमरहस्य, सब अशुभों
वाली और अपराधों के निवारण करनेवाली है पूर्व
मने महादेवजी से सुना है २५ जे निश्चय अपराध
मनुष्य हैं और विष्णुजी के नामोंको जानते हैं तिन
मुक्ति होजाती है २६ हे मानके देनेवाले ! नामों का
पुराण में कहागया है तिससे सब पुराण के सुननेके
हे भाई ! जिसकी प्रतिदिन पुराणके सुनने में श्रद्धा
के ऊपर अनुगोंसमेत साक्षात् शिव और विष्णुजी
२८ पुष्करतीर्थ, प्रयाग और सिन्धुके संगममें स्नान
ल होताहै तिसका दूनाफल श्रद्धा से सुननेवाले को
एकाग्रचित्त होकर पुराणोंको पढ़ते और सुनते हैं उन
र में कपिला गऊके दानका फल प्राप्त होताहै ३०
धनकी इच्छा करनेवाला धनको, विद्या की इच्छा
और मोक्षकी इच्छा करनेवाला मोक्षको प्राप्त होता
को सुनते हैं वे निश्चय करोड़ जन्मों के इकट्ठे किये
को नाशकर भगवान् के स्थानको जाते हैं ३२ हे
नेवाले ब्राह्मणको भक्तिभावसे गऊ, पृथ्वी, सोना,
र फूल आदिकों से आनन्दपूर्वक पूजन करै ३३
होकर कांसे के बनेहुए बर्तन, जल के बर्तन,
की बनीहुई मुंदरी, ३४ आसन और फूलों के
व्य न क[illegible] तिससे दानहीन फलको न प्राप्त
सब [illegible]ना और द्रव्य की सिद्धि केलिये
[illegible] चांदी, कपड़ा, फूलों की माला,
[illegible] देताहै वह भगवान् के स्थान
[illegible] पुस्तक को करते हैं चित्रगुप्त जी
यहां नहीं रखते हैं ३[illegible] ॥
[illegible] पंचविंशतितमो[illegible]यः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय

प्रतिज्ञा के पालने के फल और न पालने के दोषों का | हे श्रेष्ठ

शौनकजी बोले कि हे बुद्धिमान्, सूतजी ! प्रति जोकि म
क्या पुण्य होताहै और प्रतिज्ञाके खण्डन में क्या पाप रदेते है
में सुनने की इच्छा करताहूं कहिये १ हे कृपाके समुद्र निन्द
सौगन्दमें और सत्य सौगन्द में क्या होताहै दक्षिणा प्रसि
कृपाकर कहिये २ तब सूतजी बोले कि हे मुनिश श्री
वैष्णवों में तुम श्रेष्ठ और सब मनुष्यों के हितमें रत हो से
कहताहूं सुनिये ३ मनुष्य सौ गौवोंको देकर जो फल
तिससे करोड़गुणा प्रतिज्ञाके पालनमें पाताहै ४ प्रति,
से मूर्ख घोर नरक को जाता है और सौ मन्वन्तर त
पचताहै ५ तदनन्तर पृथ्वी में दरिद्री के घर में जन्म खण्ड
और कपड़ों से हीन होकर अपने कर्मसे क्लेश पाताहै निस्सन
देवता, अग्नि और गुरुजीके समीप सौगन्द न करै
विष्णुजी की देहको जलाताहै वंश लुप्त नहीं होता है
झूंठ सौगन्द में मैं इस समय में क्या कहूं सौ मन्वं
नरक में रहता है ८ हे मुनिश्रेष्ठ ! सत्य सौगन्द
निर्माल्य को स्पर्श करने से सात पुरुषों को लेक
कालतक पचता है ९ कदाचित् जन्म पाता है
कोढ़ी होताहै सत्यकी सौगन्द से ऐसा होताहै सौगन्द
में मैं क्या निश्चय कहूं १० जो मनुष्य तिसको
प्रतिपाल करताहै तिसकी प्राप्ति के हे सत्यही सत्य
कहताहूं ११ जो मनुष्य हाथ जबतक नहीं
करताहै तबतक पितर यातना और आप भी
मरकर निस्सन्देह करोड़ पुरु को जाताहै १३
तब शौनक बोले कि हे सूतमुनि किसको द
के प्रतिपा न से कृ
आदरसा सुनना चहताहूं